॥ श्री ॥

आत्म पुराण

कुंडलिया सहित

रजि. नं. – L-3224/67

यह पुस्तक
सोनी हरिचंद सिरोही नगरवालों ने बनाके
"धी एडवर्ड " प्रिन्टींग प्रेस, घीकांटा,
अहमदाबाद संवत १९८१ में छपवाया

प्रथम आवृत्ति : १०००

आवृत्ति नवमी कॉपी : १०००

संवत २०६७

मुद्रक : देव ऑफसेट, अहमदाबाद

भूमिका

मैं नीचे सही करनार सब सज्जन लोगों से विनती करता हूँ कि मैंने गुरु अनोपदासजी महाराज के जो उपदेश है उसको कुण्डलिया बनाकर छपवाये है, जिसको आप लोग पढ़ के पूरा-पूरा ध्यान देंगे ताकि आपको मालूम होगा कि जगत में क्या क्या अंधेर है । कोई भूलचूक हो तो माफ करें ।

आपका सेवक

सोनी हरिचंद

सिरोही नगर (राजस्थान)

अथ आत्म पुराण लिख्यंते

कुण्डलियां

सरस्वत सुमरुं शारदा, गुणपत लागूं पाय ।
सत वारता कहत हूँ, दीजो मोय बताय ॥
दीजो मोय बताय, सिद्धि में आए रेणा ।
आद धरम की बात, स्वास में सिद्धि देणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, ब्रह्म में रहो समाय ।
सरस्वत सुमरुं शारदा, गुणपत लागूं पाय ॥ १ ॥

पेली देवत सुमरलो, गजानन्द को नाम ।
सुख संपत सेवा करे तो, तोय करे सिद्ध काम ॥
तोय करे सिद्ध काम, पूत पार्वती जाया ।
पिता तो शंकरदेव, गणपति नाम देराया ॥
कहे सोनी हरिचंद, सार दिल अपने काम ।
पेली देवत सुमरलो, गजानन्द को नाम ॥ २ ॥

धुंधाळो कहे गुणपति, गुणेश है घण रुप ।
पूजंते सब देवता, और पूजंते भूप ॥
और पूजंते भूप, सकल में ज्यांकी सेवा ।
पान सुपारी फूल, चढ़ावत दुनिया मेवा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सेव गुणपत कूं धूप ।
धुंधाळो कहे गुणपति, गुणेश है घण रुप ॥ ३ ॥

सर्व गुणपति देखलो, आद पृथ्वी मांय ।
बिन खोज्या दरसे नहीं, और खोज्या आतम मांय ॥
और खोज्या आतम मांय, गुणपति कोई एक परसे ।
करे उनमुनि ध्यान, गुणपति सनमुख दरसे ॥
कहे सोनी हरिचंद, गीत गुणपत का गाई ।
सर्व गुणपति देखलो, आद पृथ्वी मांय ॥ ४ ॥

चार वेद हिन्दू में कहत है, मुसलमान कहे कुराण ।
दोई दीन को धरम है, सुनियो आतम पुराण ॥
सुनियो आतम पुराण, जीव का करो विचारा ।
तजो पाप अभिमान, धरम सूं उतरो पारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख दिल अपणों नारायण ।
चार वेद हिन्दू में कहत है, मुसलमान कहे कुराण ॥ ५॥

पाणी पृथ्वी आद है, आद धणी को नाम ।
सरवर तरवर आत्मा, पुरुष बसाया गाम ॥
पुरुष बसाया गाम, नाम मालिक का लिजे ।
निज मंत्र कूं देख, प्रेम का प्याला पीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पूजंते शंकर श्याम ।
पाणी पृथ्वी आद है, आद धणी को नाम ॥ ६ ॥

कूदरत बणी पृथ्वी, शीश रच्यो आकाश ।
ब्रह्मज्ञानी सेवा करे, सो नकल ज्यांके पास ॥
नकल ज्यांके पास, हाथ मुश्किल सूं आवे ।
पाप तणे परसंग, मानवी आफत पावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, नकल हिरदे में बांच ।
कूदरत बणी पृथ्वी, शीश रच्यो आकाश ॥ ७ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, तीनों को प्रकाश ।
सावित्री और लक्ष्मी, गवरां ज्यांके पास ॥
गवरां ज्यांके पास, पाठ शंकर ने लीदा ।
ब्रह्मा वांचे वेद, राज विष्णु कूं दीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, संत तो ज्यांके दास ।
ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, तीनों को प्रकाश ॥ ८ ॥

साच बतायो सकल कूं, झूठ बतायो नांही ।
दया धरम कर मानवी, रेते पृथ्वी मांही ॥
रेते पृथ्वी मांही, सूरमा क्षत्री वेता ।
लगन मगन प्रकाश, न्याय की बातां केता ॥
कहे सोनी हरिचंद, सत्त में भेला सांई ।
साच बतायो सकल कूं, झूठ बतायो नांही ॥ ९ ॥

असल मुसल को देखकर, सकल दुकल कूं जाण ।
करम-धरम कूं याद कर, दिया पद निर्वाण ॥
दिया पद निर्वाण, पाप का छूटे फंदा ।
मुक्ति पावे जीव, और सब होवे आनंदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, लखो दिल अपणो लेख ।
सकल दुकल कूं जाण के, असल मुसल कूं देख ॥ १० ॥

सकल अकल कूं भूल गयी, नहीं धरम की ओट ।
बुद्धि बिगड़ी पाप से, मारे छानी चोट ॥
मारे छानी चोट, घाव तो मारे लोका ।
गुपत भेद कूं देख, जगत में उठे दोखा ॥
कहे सोनी हरिचंद, अकल का बांधो कोट ।
सकल अकल कूं भूल गयी, नहीं धरम की ओट ॥ ११ ॥

लगन मगन में कूंण है, सकल दुखी देखाय ।
वाणा प्रगट जद हुआ, लक्ष्मी गई चुराय ॥
लक्ष्मी गई चुराय, जगत में वाणा राजी ।
और दुखी जुग-जीव, जोगिया मुल्ला काजी ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम को न्याय कराय ।
लगन मगन में कूंण है, सकल दुखी देखाय ॥ १२ ॥

पापी पाप चलाय के, कियो जगत में जाल ।
भांगे चेतन आत्मा, जदी पड़त है काल ॥
जदी पड़त है काल, जाल इंदर पे छायो ।
राक्षस विद्या करे, जमी को तेज हटायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, नहीं था जगत में काल ।
पापी पाप चलाय के, कियो जगत में जाल ॥ १३ ॥

शस्त्र मारो पाप के, पाप वदीयो है पूर ।
आधा भांगे आत्मा, आधा बोले कूड़ ॥
आधा बोले कूड़, करम सब वाणे कीदा ।
दया धरम कूं छोड़, हराम का प्याला पीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत को खेच्यो नूर ।
शस्त्र मारो पाप के, पाप वदीयो है पूर ॥ १४ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, आदू पुजा ऐ ।
और पंथ झूठा चले, सो कियो जगत में खै ॥
कियो जगत में खै, राक्षसी घर-घर डोले ।
पोथी लेवे हाथ, स्यान सूं मुडे बोले ॥
कहे सोनी हरिचंद, सत की जग में जय ।
ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, आदू पूजा ऐ ॥ १५ ॥

आद वचन कूं याद कर, और पंथ कूं छोड़ ।
पाप पंथ झूठा चले, सो नहीं काज विद कोर ॥
नहीं काज विद कोर, जगत में झूठा फंदा ।
निज मंत्र कूं छोड़, भूल गया रैणी बंदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पकड़ ले पीछी डोर ।
आद वचन कूं याद कर, और पंथ कूं छोड़ ॥ १६ ॥

तिर्गुण माया जगत में, दूजो दीशे कूड़ ।
पंथ चलाया राक्षसी, भक्ति मेली धूड़ ॥
भक्ति मेली धूड़, लुगायां मुण्डण लागा ।
देखो ज्यांको रुप, तीर पर बैठा कागा ॥
कहे सोनी हरिचंद, किस विद आवे नूर ।
तिर्गुण माया जगत में, दूजो दीशे कूड़ ॥ १७ ॥

कालो मुंडो पाप को, गोरो मुंडो नांही ।
पीलो मुंडो आपको, आप आपके मांही ॥
आप आपके मांही, पाप कूं दुरो मेलो ।
पकड़ो शील संतोष, धरम कूं पाछो झेलो ॥
कहे सोनी हरिचंद, कहत हूँ सबके तांही ।
कालो मुंडो पाप को, गोरो मुंडो नांही ॥ १८ ॥

पाप किया सूं पुन घटे, घटे पुरुष की आन ।
अज्ञानी भटकत फिरे, सो कोई न देवे मान ॥
कोई न देवे मान, ज्ञान कर पीछा उठे ।
करे धरम की सेव, फेर भी फन्दा छूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पकड़ ले अपणा कान ।
पाप किया सूं पुन घटे, घटे पुरुष की आन ॥ १९ ॥

सती पुरुष को समझ है, रखे धरम की कार ।
पापी कूं फटकार है, घर-घर खावे मार ॥
घर-घर खावे मार, अकल बिन रह्या अधुरा ।
करे पाप का काम, मानवी राखे दूरा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पकड़ ले सत की सार ।
सती पुरुष को समझ है, रखे धरम की कार ॥ २० ॥

साच वचन में सब मिले, झूठ वचन में कांई ।
बिना धरम रा मानवी, ईज्जत पाते नांहि ॥
ईज्जत पाते नांहि, नीच का नंबर पावे ।
जल नहीं आवे हाथ, अन्न तो कैसे खावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, दुखी वे रहते वांई ।
साच वचन में सब मिले, झूठ वचन में कांई ॥ २१ ॥

अग्नि पृथ्वी जल पवन, चन्द्र भाण आसमान ।
लक्ष्मी तरवर अन्न बड़ा, जीवों उपर दान ॥
जीवों उपर दान, आत्मा राजी रेवे ।
वाणा पाप कराय, सकल कूं आफत देवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पकड़ लो दिल में स्यान ।
अग्नि पृथ्वी जल पवन, चन्द्र भाण आसमान ॥ २२ ॥

गऊ भैंसियां गाड़री, अजीया पालत देह ।
श्याम सफेदा नांदीया, ज्यांकी बोलो जय ।
ज्यांकी बोलो जय, जगत में पांचु पूर ।
सदा ज्यां कूं सेव, जगत में आसी नूर ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम सूं बरसे मेह ।
गऊ भैंसियां गाड़री, अजीया पालत देह ॥ २३ ॥

अजीया गाड़र भैंस बैल गऊ, ऐ तो पांचु देव ।
ऐ ही जगत कूं पूरवे, जद रांधे घी में सेव ॥
जद रांधे घी में सेव, जगत जद रेवे राजी ।
और सुखी जुग जीव, जोगीया मुल्ला काजी ॥
कहे सोनी हरिचंद, धूप तो ज्यां कूं सेव ।
अजीया गाड़र भैंस बेल गऊ, ऐ तो पांचु देव ॥ २४ ॥

गऊ जगत कूं देत है, दूध दही घी छास ।
और जगत कूं पालती, पोते खावे घास ॥
पोते खावे घास, ज्यां कूं मारण जावे ।
और पाप वदियो भरपूर, सुख वे कैसे पावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप से होवे नाश ।
गऊ जगत कूं देत है, दूध दही घी छास ॥ २५ ॥

मिरग रोज और सांबरा, भोले जीव केवाय ।
खरगु भोला जीवड़ा, ज्यां कूं मारण जाय ॥
ज्यां कूं मारण जाय, जगत में ऊंदा चाले ।
ऐसा है कोई भूप, धरम कूं हाथे झाले ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव को करो न्याय ।
मिरग रोज और सांबरा, भोले जीव केवाय ॥ २६ ॥

खर घोड़ा और ऊंटीया, हस्ती जग का रूप ।
खर पे लादे बोरियां, कुंजर माथे भूप ॥
कुंजर माथे भूप, जगत में दीशे चोका ।
और जड़ाणी झूल, पागड़ा चांदी लोका ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां कूं कीजे धूप ।
खर घोड़ा और ऊंटीया, हस्ती जग का रुप ॥ २७ ॥

कुत्ता बिल्ली कागड़ा, और पंछीयां मोर ।
ऐ तो भोला जीवड़ा, किणरो लेवे चोर ॥
किणरो लेवे चोर, ज्यां कूं मारण लागा ।
पाप वदीयो भरपूर, देवता गैले लागा ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां को कीजे तौर ।
कुत्ता बिल्ली कागड़ा, और पंछीयां मोर ॥ २८ ॥

मछीया जल का मींड़का, ज्यां कूं मानव खाय ।
पापी पकड़े जाळ में, भरे टोकरी मांय ॥
भरे टोकरी मांय, घरां में गंज बनावे ।
गयो मिनख ईमान, रांध के इन कूं खावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव को करो न्याय ।
मछीया जल का मींड़का, ज्यां कूं मानव खाय ॥ २९ ॥

राक्षस कूं संहारते, ज्यांका क्षत्री नाम ।
ले शस्त्र सामा चले, तो ऐ रजपूता काम ॥
ऐ रजपूता काम, गरीबां घात न घाले ।
होवे युद्ध संग्राम, खड़ग जद हाथे झाले ॥
कहे सोनी हरिचंद, सूरमां भेला श्याम ।
राक्षस कूं संहारते, ज्यांका क्षत्री नाम ॥ ३० ॥

जीव जीव सब खेलते, मानव खाते नांही ।
मानव हर की देड़ली, हर तो मानव मांही ॥
हर तो मानव मांही, जीव की सेवा करता ।
एक आत्मा जाण, लायके भोजन धरता ॥
कहे सोनी हरिचंद, प्राण में बोले सांई ।
जीव जीव सब खेलते, मानव खाते नांही ॥ ३१ ॥

मानव देवत रुप है, मानव बांदी कार ।
मानव भागे आत्मा, दीनी देही विटाल ॥
दीनी देही विटाल, देवता दूरा रेवे ।
जाय करे अस्नान, तोई वे धूप न लेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुणो भाई बुढ़ा बाल ।
मानव देवत रुप है, मानव बांदी कार ॥ ३२ ॥

मानव हर को लाड़लो, मानव हर की देह ।
मानव भागे आत्मा, जदी उड़गी खेह ।।
जदी उड़गी खेह, अबी सूं देह बचावे ।
और होवे समय भरपूर, सुख सूं रोटी पावे ।।
कहे सोनी हरिचंद, धरम सूं राखो नेह ।
मानव हर को लाड़लो, मानव हर की देह ।। ३३ ।।

जीव मारणा छोड़ दे, गुरु धरम कूं झेल ।
इन्द्रजाली वाणियां, परो कड़ासी तेल ।।
परो कड़ासी तेल, पकड़ के फैकी आगा ।
भटकत फिरो उजाड़, जालियां करसी नागा ।।
कहे सोनी हरिचंद, पाप बनियों का खेल ।
जीव मारणा छोड़ दे, गुरु धरम कूं झेल ।। ३४ ।।

सदा समझ कर मानवी, रखो पिंड में श्यान ।
इन्द्रजाली वाणिये, केई घटाया मान ।।
केई घटाया मान, जालियां जग में खोटा ।
लक्ष्मी ले गया लूट, जगत में लाया टोटा ।।
कहे सोनी हरिचंद, अकल सूं रेसी आन ।
सदा समझ कर मानवी, रखो पिंड में श्यान ।। ३५ ।।

परमेश्वर सूं प्रीत कर, दया धरम कूं जाण ।
कूंड़ कपट और चोरियां, या छोड़ दे बाण ।।
या छोड़ दे बाण, काम सब घर का करणा ।
अंत करण के बीच, नाम मालिक का धरणा ।।
कहे सोनी हरिचंद, वचन के रीजे पाण ।
परमेश्वर सूं प्रीत कर, दया धरम कूं जाण ।। ३६ ।।

विक्रम चोरी वद गई, नर नारी में पूर ।
पाप करावे वाणियां, करे वे बोले कूड़ ॥
करे वे बोले कूड़, ज्यां को कैसा कीजे ।
पग में सांकल डाल, शीश पर लकड़ी दीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणियां राखो दूर ।
विक्रम चोरी वध गई, नर नारी में पूर ॥ ३७ ॥

लख चौरासी जून की, बुद्धि गई फिराय ।
कोई किसी कूं खात है, कोई किसी कूं खाय ॥
कोई किसी कूं खाय, अंग में दया नहीं व्यापे ।
देखत के भोपाल, जीव की गर्दन कापे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम को करो उपाय ।
लख चौरासी जून की, बुद्धि गई फिराय ॥ ३८ ॥

पाप जगत को बंद करे, ऐसा है कोई भूप ।
अरग चढ़ाऊं भाण कूं, वां पर वारुं धूप ॥
वां पर वारुं धूप, जीव का परवस बांधे ।
राजा शामिल होय, धरम की बेड़ी सांधे ॥
कहे सोनी हरिचंद, ब्रह्म को एक ही रुप ।
पाप जगत को बंद करे, ऐसा है कोई भूप ॥ ३९ ॥

मूल पाप तो देखलो, जैन वाणियां मांय ।
राक्षस विद्या चलत है, देवत विद्या नांय ॥
देवत विद्या नांय, पंडिता बूजो मैना ।
और ब्रह्मज्ञान उपाय, पंडिता आगे कहना ॥
कहे सोनी हरिचंद, भरम में भूला कांय ।
मूल पाप तो देखलो, जैन वाणियां मांय ॥ ४० ॥

बणे सौदागर बंकड़ा, बाजे उजल जात ।
बूछड़ गऊवा मारते, रोकड़ देवे हाथ ॥
रोकड़ देवे हाथ, ज्यांका करो विचारा ।
राक्षस विद्या देख, पाप का चले पछाड़ा ॥
कहे सोनी हरिचंद, प्राण कूं करते घात ।
बणे सौदागर बंकड़ा, बाजे उजल जात ॥ ४१ ॥

किरीया नहीं इण जात में, मुड़दो अवगत जाय।
कांसी फोड़े मसाण में, देही देवका मांय ॥
देही देव का मांय, देव भी मेला जाणो ।
छोटा कुळ की जात, आर में कीकर आणो ॥
कहे सोनी हरिचंद, नहीं कोई बाल बणाय ।
किरीया नहीं इण जात में, मुड़दो अवगत जाय ॥ ४२ ॥

बिना धरम की जात को, रांध्यो खावे कूंण ।
जो रांध्योड़ो आचरे तो, जाय भूत की जूंण ॥
जाय भूत की जूंण, अंग में घूमत रेवे ।
भोपो लावे भाव, झाड़ में खीला देवे ।
कहे सोनी हरिचंद, जाल की बातां सुण ।
बिना धरम की जात को, रांध्यो खावे कूंण ॥ ४३ ॥

चुन मंगावे गेहूँ को, पाड़ो देह बणाय ।
गुळ घलावे मालवी, पाणी मांय भराय ॥
पाणी मांय भराय, शीश पर छुरीया राखे ।
पीछे मेले घाव, आंगली लेकर चाखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, राक्षसी करम सुणाय ।
चुन मंगावे गेहूँ को, पाड़ो देह बणाय ॥ ४४ ॥

जैन धरम को नाम है, करे जीव पर घात ।
वाणा गुपती चोर है, वाणा राक्षस जात ॥
वाणा राक्षस जात, ज्यांका मन्दिर मोटा ।
गुपती बैठे मांय, ज्यांका दर्शन खोटा ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत सब सुणियो बात ।
जैन धरम को नाम है, करे जीव पर घात ॥ ४५ ॥

वाणा हिन्दू होवते, तो पूजंते अवतार ।
मुसलमान जो होवते, तो पीरों देवद्वार ॥
पीरों देवद्वार, वाणिया राक्षस वाजे ।
झूठा ज्यांका देव, मन्दिरां भूतण गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुणजो राजद्वार संसार ।
वाणा हिन्दू होवते, तो पूजंते अवतार ॥ ४६ ॥

तीर्थांगर सब राक्षसी, ऐ अवतारी नांही ।
कला कांमरु देश की, सभी वाणिया मांही ॥
सभी वाणिया मांय, आद के राक्षस केवे ।
देवत ज्यांका भूत, जिणे सूं भेला रेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, इसमें कूड़ नहीं है कांई ।
तीर्थांकर सब राक्षसी, ऐ अवतारी नांही ॥ ४७ ॥

सदा कलंकी वाणिया, ये पड़ाते काल ।
मंदिर जाते दरसणां, रखते चावल दाल ॥
रखते चावल दाल, इसी विद भेला दीखे ।
गुपत मरावे जीव, कुटूम्ब का सब ही सीखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख बनियों का जाल ।
सदा कलंकी वाणिया, ये पड़ाते काल ॥ ४८ ॥

जात वाणिया करत है, भाई-बेन घरवास ।
काथ बिगड़ियो जोयलो, कहां धरम कहां साच ॥
कहां धरम कहां साच, देखकर परजा भूले ।
संगत करे अनेक, और भी घर-घर डूले ॥
कहे सोनी हरिचंद, सकल की खुलगी कास ।
जात वाणिया करत है, भाई-बेन घरवास ॥ ४९ ॥

पैली सब में तेज हतो, अबे तेज कहां जाण ।
कांई करम ओ निपनो, ज्यांकी कीजे छाण ॥
ज्यांकी कीजे छाण, पोढ़ते ऊंड़ा ओरा ।
परी बिगड़सी बात, पड़ेला पीछे फोड़ा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप के मारो बाण ।
पैली सब में तेज हतो, अबे तेज कहां जाण ॥ ५० ॥

गुरु मिलिया मोय प्रेम से, दी धरम की टेम ।
वो नर पुस्तक वांचते, मोकूं आयो वेम ॥
मोकूं आयो वेम, ब्रह्म में ज्ञान मिलायो ।
जात जात सब जोई, पाप वाणा में आयो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की बांधो नेम ।
गुरु मिलिया मोय प्रेम से, दी धरम की टेम ॥ ५१ ॥

गुपत पाप कूं कहत है, देश पिंडली पर ।
कंचन की नव डूंगरी, ज्यां कलंकी नर ॥
ज्यां कलंकी नर, जगत में काळ चलाया ।
आतम कटे अनेक, बुद्ध कूं भ्रष्ट मिलाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, बिगड़गे नारी नर ।
गुपत पाप कूं कहत है, देश पिंडली पर ॥ ५२ ॥

वीसन कहते देव की, धन भेजंते वांही ।
कंचन सोनो जगत को, नवे डूंगरी मांही ॥
नवे डूंगरी मांय, आठ तो कहते पूरी ।
बाकी लक्ष्मी जाई, एक के रही अधूरी ॥
कहे सोनी हरिचंद, कहत हूँ सुणते नांही ।
वीसन कहते देव की, धन भेजंते वांही ॥ ५३ ॥

पाप चौरासी गुपत है, देश पिंडली जायर ।
लाखों भागे आत्मा, खारो वेगो सायर ॥
खारो वेगो सायर, सूरमां बिड़द हटाया ।
लक्ष्मी जगत सूं जाई, सती का सत घटाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, खड़ग कर जूना तैयार ।
पाप चौरासी गुपत है, देश पिंडली जायर ॥ ५४ ॥

लख चौरासी कुंडियां, ज्यां करतबी वेद ।
गुपत पाप वहां होत है, दुनिया पावे खेद ॥
दुनिया पावे खेद, रगत सूं भरता कुंडी ।
लख चौरासी जून, ज्यां की होमत मूंडी ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख वाणा का भेद ।
लख चौरासी कुंडियां, ज्यां करतबी वेद ॥ ५५ ॥

रोग जगत में चलत है, वहां होत है जाप ।
जीव गुपत से मारते, अनासार वहां पाप ॥
अनासार वहां पाप, जगत में मरीया पारा ।
भैंसा कूं सिंगार, रगत की देता धारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, कराते बनिया पाप ।
रोग जगत में चलत है, वहां होत है जाप ॥ ५६ ॥

गुपत चिठ्ठीयाँ भेजते, ऐ बनिया का बेत ।
अन्न खाने का आसरा, वहां कूं बनिया देत ॥
वहां कूं बनिया देत, गुपत सूं ज्यां ज्यां मेले ।
आतम करे हलाल, आप मुल्कां में खेले ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव कूं राखे खेद ।
गुपत चिठ्ठीयाँ भेजते, ऐ बनिया का बेत ॥ ५७ ॥

थल वट जल ऊंडा घणा, ऐ जादू के काम ।
गुजरात रंडाणी कहत है, कियो शनि बदनाम ॥
कियो शनि बदनाम, सायर कूं खारो कीदो ।
राक्षस विद्या करे, शनिचर माथे दीदो ॥
कहे सोनी हरिचंद, मोय तो दीशे आम ।
थल वट जल ऊंड़ा घणा, ऐ जादू के काम ॥ ५८ ॥

जोगी जंगम ब्राह्मणां, सन्यासी दरबेस ।
छट्ठा दर्शन राज का, ज्यां में मीन न मेख ॥
ज्यां में मीन न मेख, वाणिये मंतर दीधा ।
जतीया भेळा घाल, राज कूं दूरा कीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, राज का दर्शन चारो देश ।
जोगी जंगम ब्राह्मणां, सन्यासी दरबेस ॥ ५९ ॥

समझो खान राजेश्वरां, अंग्रेजों संसार ।
सब विष्णु सब समझलो, मेणा भील चमार ॥
मेणा भील चमार, राज सूं मिलती कीजे ।
करो जगत को न्याय, करों में शस्त्र लीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप के गोली मार ।
समझो खान राजेश्वरां अंग्रेजों संसार ॥ ६० ॥

बरस हजारां बरतीया, सब कूं दीशे आद ।
चार जुगां से पाप है, पड़ी जगत में खाद ॥
पड़ी जगत में खाद, धरण कूं दीदा धोखा ।
लक्ष्मी ले गया लूट, दुखी भव सागर लोका ॥
कहे सोनी हरिचंद, दुखी जुग जोगी साद ।
बरस हजारां बरतीया, सब कूं दीशे आद ॥ ६१ ॥

पावां कंचन पैरते, वे राजा के पूत ।
अबे पैरते वाणिया, ऐ राक्षस के मूत ॥
ऐ राक्षस के मूत, राज में कीमत कांई ।
सिरदारां रंग जाय, हाथ सूं तोड़े बांई ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिया जम का दूत ।
पावां कंचन पैरते, वे सिरदारों के पूत ॥ ६२ ॥

कुल माया कूं सिर करो, जग में कार बंधाय ।
गुरु धरम कूं याद कर, प्रजा धरम चलाय ।
प्रजा धरम चलाय, राक्षी बेटी देवे ।
खून मांस कूं बेच, हजारों रोकड़ लेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत कूं दिया डुबोय ।
कुल माया कूं सिर करो, जग में कार बंधाय ॥ ६३ ॥

पंचोली दीवाण कर, पंचोली लिखदार ।
सिरदारा दो हाकमी, मुसलमान असवार ॥
मुसलमान असवार, मेणका चौकी मेलो ।
करो कचेड़ी पुर, करों में शस्त्र झेलो ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुखी वो बावन सायर ।
पंचोली दीवाण कर, पंचोली लिखदार ॥ ६४ ॥

क्षत्री दल भरती करो, सब ही शस्तरदार ।
चाकर और सर बंदियां, बांधों अपणी वाड़ ।
बांधों अपणी वाड़, राज सब मिलती कीजे ।
शामिल मुसलमान, हेत सूं भेला रीजे ।।
कहे सोनी हरिचंद, धरम की बांदो कार ।
क्षत्री दल भरती करो, सब ही शस्तरदार ।। ६५ ।।

सतजुग हस्ती पूजते, अशंख जुगां से गाय ।
तीजे घोड़ो पूजते, अज्या कलजुग मांय ।।
अज्या कलजुग मांय, संत जन पूजण जाता ।
वाणा करे हलाल, अगाड़ी मारण खाता ।।
कहे सोनी हरिचंद, जगत कूं दिया भूलाय ।
सतजुग हस्ती पूजते, अशंख जुगां से गाय ।। ६६ ।।

चंदन माला ब्राह्मणा, मुसलमान रुद्राक्ष ।
तुलसी माला राज की, ये सकल के पास ।
ये सकल के पास, जगत में तीन भणीजे ।
दूजा राक्षस भेल, जगत में झूठ भणीजे ।।
कहे सोनी हरिचंद, तीन की देखो तास ।
चंदन माला ब्राह्मणा, मुसलमान रुद्राक्ष ।। ६७ ।।

शिव विष्णु दर्शन करो तो, कर सोले सिणगार ।
जैन धरम के बंब है, दोय दीन अवतार ।।
दोय दीन अवतार, मनों का कारज करसी ।
सदा धरम कूं झेल, मांगीया इन्दर वरसी ।।
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां को अपरमपार ।
शिव पीरां दर्शन करो तो, कर सोले सिणगार ।। ६८ ।।

शिव पीरां से जाणजो, राक्षस वाणा दूर ।
चुड़ेला सिकोतरी, और पापीयां कूड़ ।।
और पापीयां कूड़, ज्यां पे खड़ग बजावे ।
पड़े शस्त्रां चोट, राक्षसी भागा जावे ।।
कहे सोनी हरिचंद, कहत हूँ पूरा पूर ।
शिव पीरां से जाणजो, राक्षस वाणा दूर ।। ६९ ।।

पृथ्वी मोटो जीव है, प्रजा पृथ्वी मांय ।
खंड ब्रह्मण्ड तो एक है, देखत भूलो कांय ।।
देखत भूलो कांय, ब्रह्म की ज्योति जगावो ।
आद उत्पति देख, जगत में धरम चलावो ।।
कहे सोनी हरिचंद, धरण मां आदू सांई ।
पृथ्वी मोटो जीव है, प्रजा पृथ्वी मांही ।। ७० ।।

पृथ्वी के आकार है, चार पांव मुख कान ।
नेण नासका शीश है, मूल इंदरी थान ।।
मूल इंदरी थान, वजर की काया वांकी ।
प्रजा ओदर मांय, किस विद दीशे झांकी ।
कहे सोनी हरिचंद, सत कर बातां मान ।
पृथ्वी के आकार है, चार पांव मुख कान ।। ७१ ।।

पांव पेट से बाहर है, भीतर वेते नांय ।
अपणे ओदर जीवड़ो, ज्यां कूं दीसे वांय ।।
जयां कूं दीसे वांय, रुप तो बारे देखो ।
पड़दे में आकार, जीव को कीजे लेखो ।।
कहे सोनी हरिचंद, जीव सब रेते मांय ।
पांव पेट से बाहर है, भीतर वेते नांय ।। ७२ ।।

इण विद पृथ्वी ओलखो, करो ब्रह्म में तोल ।
खंड ब्रह्मण्ड तो एक है, देखो नेत्र खोल ॥
देखो नेत्र खोल, धरण को दोखो काड़ो ।
होवे समय भरपूर, शीश पापी को वाड़ो ।
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर सब कूं बोल ।
इण विद पृथ्वी ओलखो, करो ब्रह्म में तोल ॥ ७३ ॥

जीव पेट में खात है, दुखी वे अपणी देह ।
ऐसो दुख है धरण कूं, किण विद आवे मेह ॥
किण विद आवे मेह, जमी कूं जादू पाया ।
पाणी पीती नहीं, अंग में दुख वधाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण को लीदो छेह ।
जीव पेट में खात है, दुखी वे अपणी देह ॥ ७४ ॥

दुख में अन्न नहीं भावतो, रांधो चावल दाल ।
अपणे ओदर जीवड़ो, ज्यांकूं दीसे काल ॥
ज्याकूं दीसे काल, इसी विद धरणी दरशे ।
दुख सूं पीती नहीं, सृष्टि कूं काल-ज दरशे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण को दोखो टाल ।
दुख में अन्न नहीं भावतो, रांधो चावल दाल ॥ ७५ ॥

पृथ्वी ज्योतां चार है, दो भीतर दो बाहर ।
पुरुषों ज्योतां चार है, नासा करो विचार ॥
नासा करो विचार, जीव की एक ही माया ।
ब्रह्मज्ञान कूं देख, खोजलो अपनी काया ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण के जल को आहार ।
पृथ्वी ज्योतां चार है, दो भीतर दो बाहर ॥ ७६ ॥

नव सौ नदियां धरण में, नव सौ देह में नाड़ ।
नवखंड की आ पृथ्वी, नव ही देह का द्वार ॥
नव ही देह का द्वार, शीश तो दसमां जाणो ।
खंड ब्रह्मण्ड तो एक, न्याय कर दिल में छाणो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण का देखो आकार ।
नव सौ नदियां धरण में, नव सौ देह में नाड़ ॥ ७७ ॥

वजर धरण को हाड़ है, पत्थर ज्यांको नाम ।
पीलो ज्यांको रुप है, मस्तक ज्यांको श्याम ॥
मस्तक ज्यांको श्याम, खाल तो लोह सूं सेठी ।
तारा चंदा भाण, और सब दीशे माटी ॥
कहे सोनी हरिचंद, आत्मा करते काम ।
वजर धरण को हाड़ है, पत्थर ज्यांको नाम ॥ ७८ ॥

गिरिमेर तो नाभ है, ज्यां की करो पीछाण ।
पूरब उत्तर दक्षिण पश्चिम, चार खूंट कूं जाण ॥
चार खूंट कूं जाण, अंग देनो वहाँ देखो ।
छाती पेडु चार, खूंट को कीजे लेखो ॥
कहे सोनी हरिचंद, नाभ अपने की बाण ।
गिरिमेर तो नाभ है, ज्यां की करो पीछाण ॥ ७९ ॥

धरण नाग पर कहत है, नाग मेरगढ़ पास ।
वो ही नाड़ियां आप में, ज्यां सूं चाले स्वास ॥
ज्यां सूं चाले स्वास, नहीं तो सुखमण निरखो ।
वां सूं चाले तंत, पांच कूं सुर में परखो ॥
कहे सोनी हरिचंद, इसी का कीजे ख्याल ।
धरण नाग पर कहत है, नाग मेरगढ़ पास ॥ ८० ॥

वजर धरण की चरबीयां, ज्यांकी धातु चार ।
तांबो चांदी सोवरण, चौथी लोचन सार ॥
चौथी लोचन सार, आपणी चरबी काची ।
ज्यां कूं भारी ताव, इणे कूं हलकी हलकी आंची ॥
कहे सोनी हरिचंद, परखलो कर कर प्यार ।
वजर धरण की चरबीयां, ज्यां की धातु चार ॥ ८१ ॥

वजर धरण को दूध है, लूंण ज्यांको नाम ।
सब जग इनको पावते, पाया शंकर श्याम ॥
पाया शंकर श्याम, रामरस इनको केवे ।
सब जग इनको पाय, सभी जन राजी रेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, आद से इनको काम ।
वजर धरण को दूध है, लूंण ज्यां को नाम ॥ ८२ ॥

वजर धरण को पवन है, वजर चंद और सूर्य ।
वजर धरण की अगन है, वजर देही भरपूर ॥
वजर देही भरपूर, आपणा पवना काचा ।
काचा चंद-सूर्य, प्राण का चाले स्वासा ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में ज्यांको नूर ।
वजर धरण को पवन है, वजर चंद और सूर्य ॥ ८३ ॥

गिरिमेर तो बीच है, दोला है दरिया ।
पवना वां से चलत है, गगन मंडल चढ़िया ॥
गगन मंडल चढ़िया, पवन की देखो माया ।
घट-घट ब्रह्म अनूप, खोजलो अपनी काया ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख सतगुरु की किरीया ।
गिरिमेर तो बीच है, दोला है दरिया ॥ ८४ ॥

सब आतम एक ब्रह्म है, पृथ्वी है परिब्रह्म ।
तरवर जड़ को ब्रह्म है, सुमरण अपणो करम ॥
सुमरण अपणो करम, असल में एक ही दरसे ।
मंगल गाय अनेक, असल कोईक परसे ॥
कहे सोनी हरिचंद, दया बिन कैसा धरम ।
सब आतम एक ब्रह्म है, पृथ्वी है परिब्रह्म ॥ ८५ ॥

आद गुणों कूं ओलखो, पवना पाणी आग ।
रजो गुण तमो गुण, सतो गुण को लाग ॥
सतो गुण को लाग, जड़ और चेतन कीदा ।
पांच तंत गुण तीन, आठ एकण में लीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, धणी को देखो बाग ।
आद गुणों कूं ओलखो, पवना पाणी आग ॥ ८६ ॥

पांच रंग कूं परखलो, पीला हरिया लाल ।
श्याम सफेदा पांच है, ज्यांका कीजे ख्याल ॥
ज्यांका कीजे ख्याल, पांच की शोभा भारी ।
पृथ्वी आदु जीव, दूसरी आतम सारी ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख पांचां की चाल ।
पांच रंग कूं परखलो, पीला हरिया लाल ॥ ८७ ॥

सुन महासुन और नीलचंद, प्रेमचंद निराकार ।
ॐकारजी आदके, देखाया संसार ॥
देखाया संसार, जीव की उत्पत सारी ।
ब्रह्मा विष्णु महेश, सृष्टि में देवत भारी ॥
कहे सोनी हरिचंद, कूदरती नर और नार ।
सुन महासुन और नीलचंद, प्रेमचंद निराकार ॥ ८८ ॥

पैली मानव जाणते, हिन्दू मुसलमान ।
जैन धरम ओ कूंण है , ज्यांकी कीजे छाण ॥
ज्यांकी कीजे छाण, पाप सब यां उपाया ।
राक्षस विद्या करे, जगत में काल चलाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, दया और खूटा दान ।
पैली मानव जाणते, हिन्दू मुसलमान ॥ ८९ ॥

सब जल की आ उतपति, प्रजा पृथ्वी रूख ।
जो पृथ्वी जल नहीं पीये, तो सब ही जावे सूक ॥
सब ही जावे सूक, जीव कूं आफत रेवे ।
राक्षस विद्या करे, वाणिया लक्ष्मी लेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, आत्मा काड़े भूख ।
सब जल की आ उतपति, प्रजा पृथ्वी रूख ॥ ९० ॥

जल बिन सब दुख पावते, पृथ्वी परजा प्राण ।
राक्षस विद्या करे, वाणिये लक्ष्मी लीदी ताण ॥
लक्ष्मी लीदी ताण, धरण कूं धोखा दीधा ।
दया नहीं अंग मांय, रगत का प्याला पीधा ॥
कहे सोनी हरिचंद, लाज नहीं रेही काण ।
जल बिन सब दुख पावते, पृथ्वी परजा प्राण ॥ ९१ ॥

जल की उतपत्ति देखलो, सब तरवर फल देत ।
और जीव कूं पालते, अपणा वे नहीं लेत ॥
अपणा वे नहीं लेत, आत्मा हर दम भाळे ।
हरि ज्यांका नाम, जगत कूं तरवर पाळे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धणी का देखो खेत ।
जल की उतपत्ति देखलो, सब तरवर फल देत ॥ ९२ ॥

जीव दया फल देत है, भंवर माख दे मद ।
वेद पुराणां देखलो, सैत बणाई सद ॥
सैत बणाई सद, देवता भूपत पीवे ।
अन्न जल बड़ा दयाल, ज्यां सूं मानव जीवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की रखणा वद ।
जीव दया फल देत है, भंवर माख दे मद ॥ ९३ ॥

कामधेनु दुख पावती, गर्भ सुखी नहीं होय ।
ऐसो दुख है धरण कूं, पड़दे आतम रोय ॥
पड़दे आतम रोय, मात कूं सुख देरीजे ।
राक्षस विद्या मेट, करो में शस्त्र लीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर दिल में जोय ।
कामधेनु दुख पावती, गर्भ सुखी नहीं होय ॥ ९४ ॥

जैसो दुख है धरण कूं, एतो पिंड देखाय ।
कोई लूला कोई पांगला, ताव सहेता जाय ॥
ताव सहेता जाय, स्त्रीया गर्भ न होवे ।
कोई गर्भ गिर जाय, हतायां बैठी रोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, राक्षसी करम हटाय ।
जैसो दुख है धरण कूं, एतो पिंड देखाय ॥ ९५ ॥

आर पेट से पड़त है, कंठा होत आवाज ।
जैसे बादल फाटते, वो ही धरण को गाज ॥
वो ही धरण को गाज, आर कूं बारे पटके ।
लख चौरासी जून, होम तलवारों झटके ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप की बांधी पाज ।
आर पेट से पड़त है, कंठा होत आवाज ॥ ९६ ॥

हरणाकुश कूं मारीयो, जादू वाणा लाय ।
रावण मारयो रामजी, दीनो खोज गमाय ॥
दीनो खोज गमाय, करम सोई वाणें कीदा ।
वाणा रेगा दूर, फंद में दूजा दीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप बनियों का गाय ।
हरणाकुश कूं मारीयो, जादू वाणा लाय ॥ ९७ ॥

कौरव मारीया पांडवे, जद भी वाणा साथ ।
फेर मारीयो कंस कूं, आ बनियों की बात ॥
आ बनियों की बात, बुद्धि कूं वाणे फेरी ।
गुपत मरावे जीव, पाप की करता ढेरी ॥
कहे सोनी हरिचंद, ठेठ से करते घात ।
कौरव मारीया पांडवे, जद भी वाणा साथ ॥ ९८ ॥

दिल्ली पासता मारीया, जादू वाणा लाय ।
करम कमायो वाणिये, ब्राह्मण कूं सिखाय ॥
ब्राह्मण कूं सिखाय, होम जादू का कीदा ।
होमिया मुगल पठाण, राज के माथे दीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सूरमा दिया खपाय ।
दिल्ली पासता होमिया, जादू वाणा लाय ॥ ९९ ॥

वोरा होकर लावते, उपर धणी बणाय ।
पीछे धोखा देवते, जड़ां समेती जाय ॥
जड़ां समेती जाय, राज कूं ऐ नहीं धारे ।
करे जगत पर जाल, पाप सूं प्रजा मारे ॥
कहे सोनी हरिचंद, अनेकां दिया खपाय ।
वोरा होकर लावते, उपर धणी बणाय ॥ १०० ॥

बुद्धि बिगड़ी पाप से, जात जात में फूट ।
वाणा गुपति चोर है, मांडी लूटा-लूट ॥
मांडी लूटा-लूट, धन दरियावां जावे ।
ऐसा दीसत नहीं, लक्ष्मी पीछी लावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, सिद्धि की आणी खूट ।
बुद्धि बिगड़ी पाप से, जात जात में फूट ॥ १०१ ॥

वार-वार अब कहत हूँ, आद उतपति जोय ।
आप पोढ़ते सैज में, दुख पड़त है मोय ॥
दुख पड़त है मोय, सिद्धि बिन प्रजा बिगड़े ।
राक्षस विद्या करे, वाणिया रईयत रगड़े ॥
कहे सोनी हरिचंद, पूंजियां लिधी खोय ।
वार-वार अब कहत हूँ, आद उतपति जोय ॥ १०२ ॥

ब्रह्म खोजीया दिखसी, आद उतपति रीत ।
न्याय कला नहीं जाणते, सो तो आंधा भीत ॥
सो तो आंधा भीत, जगत कूं कैसे तारे ।
नहीं न्याय की जाण, भूल से प्रजा मारे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की रखणा नीत ।
ब्रह्म खोजीया दिखसी, आद उतपति रीत ॥ १०३ ॥

ब्रह्म खोजीया दिखसी, आद धरम व्यवहार ।
न्याय करे राक्षस कूं मारे, ज्यां के नेत्र चार ।
ज्यां के नेत्र चार, देह में दीपक वांके ।
वो तारे सब जुग, पाप कूं दूरा नाखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, दुष्ट कूं दीजे मार ।
ब्रह्म खोजीया दिखसी, आद धरम व्यवहार ॥ १०४ ॥

न्याय धरम को कीजिये, जद होसी आनंद ।
राक्षस मेलो धूड़ में, जदी मिटेला फंद ॥
जदी मिटेला फंद, पृथ्वी पाणी पीसी ।
लख चौरासी जून, तरवरां फुलत दीसी ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत की मेटो गंध ।
न्याय धरम को कीजिये, जद होसी आनंद ॥ १०५ ॥

सिरोही नगर की उतपति, अरबदगढ़ का धाम ।
माता रुपा जनमीया, पिता रामजी नाम ।
पिता रामजी नाम, वंश काला केवाया ॥
माता है मंडोर, खूमजी मामा पाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, पूजते माता-पिता घनश्याम ।
सिरोही नगर की उतपति, अरबदगढ़ का धाम ॥ १०६ ॥

राजा केसरसिंहजी, सदा बड़ा महाराव ।
वो ही नगर में रहत हूँ, पूजत शंकर पांव ॥
पूजत शंकर पांव, जगत में राजी रेवा ।
जरणी का जसरुप, दिलां में हरदम सेवा ॥
कहे सोनी हरिचंद, धणी का मंगल गाय ।
राजा केसरसिंहजी, सदा बड़ा महाराव ॥ १०७ ॥

अनोपस्वामी भेटीया, सदा गुरु परवाण ।
सत सरोदा देखता, दिया वचन का बाण ।
दिया वचन का बाण, प्रेम की दीधी पांखों ।
चंद्र-भाण दोय दीप, हिरदा में खोली आंखों ॥
कहे सोनी हरिचंद, अबे मोय पाई जाण ।
अनोपस्वामी भेटीया, सदा गुरु परवाण ॥ १०८ ॥

अनोपदास अवतारी जोगी, धरम तणे कोटवाल ।
दरखत उनके पास है, मोय बताई डाल ॥
मोय बताई डाल, पाप देखण में आयो ।
गुरु मिले सरबंग, धरम को भेद बतायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की बांधो कार ।
अनोपदास अवतारी जोगी, धरम तणे कोटवाल ॥ १०९ ॥

सदा गुरु की वार्ता, पांचां आगे कां ।
पांचों का दरसण करो, फेर आसण बेठा रां ॥
फेर आसण बैठा रां, पांच की फेरों माळा ।
कटे करम का पाप, जीव का छूटे जाळा ॥
कहे सोनी हरिचंद, इसी विद रंग में रां ।
सदा गुरु की वार्ता, पांचां आगे कां ॥ ११० ॥

संवत उगणीस मास हतो, जेठ सुदी पांचम ।
वरस हतो एकावनो, जदी लिखाई गम ॥
जदी लिखाई गम, छावणी एरनपुर की ।
मिलिया मोय अनोप, बात कहते गुरु हर की ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुमरते अपणा दम ।
संवत उगणीस मास हतो, जेठ सुदी पांचम ॥ १११ ॥

बंदव माता एक है, जैसे पृथ्वी एक ।
माता पुत्र बीस है, पृथ्वी जीव अनेक ॥
पृथ्वी जीव अनेक, गर्भ के सब ही भाई ।
जिनका पीते दूध, सोई वे अपनी मांई ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर दिल में देख ।
बंदव माता एक है, जैसे पृथ्वी एक ॥ ११२ ॥

जोगी परचा देवते, ऐ सब जादू जाण ।
गर्भ भेद नहीं जाणता, पूजाणे का बाण ॥
पुजाणे का बाण, जगत में वाजे सिधा ।
परखण वाले लोग, उसी को कहते फंदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सदा तो न्याय पद निरवाण ।
जोगी परचा देवते, ऐ सब जादू जाण ॥ ११३ ॥

बणिया जोगी होय के, परचा दीधा हाथ ।
आठ पहर कर बंदगी, वांचत पोथी पाठ ॥
वांचत पोथी पाठ, जठा सूं जोगी साजे ।
दया धरम कूं भूल, पाप कूं लायो पाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वहां से बिगड़ी बात ।
बणिया जोगी होय के, परचा दीधा हाथ ॥ ११४ ॥

अंग्रेजां राजेश्वरां, सुणियों बोयतर खान ।
न्याय करो कुल आद को, रखो बराबर कान ॥
रखो बराबर कान, मांस को खाणो छोड़ो ।
इण सूं डूबे दीन, जगत में आयो तोड़ो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम सूं वदसी मान ।
अंग्रेजां राजेश्वरां, सुणियों बोयतर खान ॥ ११५ ॥

आप सरब गुण जाणते, सिद्धि आपके पास ।
आप जगत में थंभ हो, मोय आपकी आश ।
मोय आपकी आश, धरणी करतो कूं धाया ।
कर पृथ्वी कूं रोग, वाणिया लेगा माया ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम का सदा वेद कूं वांच ।
आप सरब गुण जाणते, सिद्धि आपके पास ॥ ११६ ॥

सदा खजाना रेवता, लाखां माथे करोड़ ।
जद रजपूतां देवता, मूंछां माथे मरोड़ ॥
मूंछां माथे मरोड़, लोक जद राजी रहेता ।
नीपज होती पूर, राज कूं हांसल देता ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये लीधा तोड़ ।
सदा खजाना रेवता, लाखां माथे करोड़ ॥ ११७ ॥

राज रखो लज रैयत की, रैयत रखो लज राज ।
सब ही शामिल होय के, बांध धरम की पाज ॥
बांध धरम की पाज, दीप में देवत वाजो ।
इंदर वरसी पूर, राज सब गेरा गाजो ॥
कहे सोनी हरिचंद, सफल जद होसी काज ।
राज रखो लज रैयत की, रैयत रखो लज राज ॥ ११८ ॥

सोनी हरिचंद ज्ञान से, आतम वेद सुणाय ।
लख चौरासी जून सो, पृथ्वी का जस गाय ॥
पृथ्वी का जस गाय, जीव सब साथे घड़िया ।
गुपती होम कराय, वाणिये आतम छलिया ॥
कहे सोनी हरिचंद, दया को लीजे तुरंत जगाय ।
सोनी हरिचंद ज्ञान से, आतम वेद सुणाय ॥ ११९ ॥

राजेश्वर मुजरा लिखूं, नबीयां खान सलाम ।
अंग्रेजां सरदा लिखूं, परसण होय दिलाम ॥
परसण होय दिलाम, बनिया रईयत लूटे ।
और दोय दीन पर जाल, जीव की उमर टूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो बनियों की जात अलाम ।
राजेश्वर मूजरा लिखूं, नबीया खान सलाम ॥ १२० ॥

कुंडलिया सत न्याय का, फकत भला के काज ।
वाणा घर-घर देखते, ज्यूं पंछी पर बाज ॥
ज्यूं पंछी पर बाज, ईसी विद परजा तोड़ी ।
बड़े-बड़े भोपाल, साग बिन जीमे कोरी ॥
कहे सोनी हरिचंद, वेगा सब चेतो राज ।
कुंडलिया सत न्याय का, फकत भला के काज ॥ १२१ ॥

ब्राह्मण भूला भेद कूं, लिया टीपणा हाथ ।
गरभ भेद नहीं जाणता, सब जादू की बात ॥
सब जादू की बात, टीपणा प्रगट कीधा ।
लोभ बतावे पूर, वाणिये हाथे दीधा ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में मांगे खात ।
ब्राह्मण भूला भेद कूं, लिया टीपणा हाथ ॥ १२२ ॥

मुगल पठाणा हिन्दवा, क्या सैयद क्या शेख ।
कायमखानी आपणा, सब ही भाई एक ॥
सब ही भाई एक, कसूंबा भेला लेणा ।
कर वाणा को नाश, नोपता डंका देणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, दीन की रखणा टेक ।
मुगल पठाणा हिन्दवा, क्या सैयद क्या शेख ॥ १२३ ॥

एक माय के पूत है, सदा आद की बात ।
वाणे भांता घाल के, करी दीन में घात ।
करी दीन में घात, मांस को खाणो लायो ।
पीछे लाया वेद, करतबी पढ़े सुणाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, जाल की पढ़ते आयत ।
एक माय के पूत है, सदा आद की बात ॥ १२४ ॥

होम साधना मंतरा, ऐ सब जादू जाण ।
जाल चलाया जगत में, गुपत चलाया बाण ।
गुपत चलाया बाण, जीव देवत पर मारे ।
करे बड़ां पर पाप, कुटूम्ब कूं कैसे तारे ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर दिल में छाण ।
होम साधना मंतरा, ऐ सब जादू जाण ॥ १२५ ॥

पाडा बैल कुंजरा, घोड़ा ऊंट शेर और रीछ ।
गैंडा और सुरगणा, वे नव जोधा जुग बीच ॥
वे नव जोधा जुग बीच, मानवी सूरा वाजे ।
करे जगत का न्याय, ज्ञान गुरुगम से गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, कटाया वाणे ज्यांका शीश।
पाड़ा बैल कुन्जरा, घोड़ा ऊंट शेर और रीछ ॥ १२६ ॥

कुत्ता सियार वानरा, रीछ जरख सीतरा शेर ।
छोटे नार बिलाड़ा मीनी, नव नोराला फेर ॥
नव नोराला फेर, धरम से शामिल रहता ।
लंक पधारे राम, प्रेम से दल में ग्याता ॥
कहे सोनी हरिचंद, लंक को लीधी घेर ।
कुत्ता सियार वानरा, रीछ जरख सीतरा शेर ॥ १२७ ॥

ऐ राजां का दल हता, ऐ फौजां के जीव ।
पांखां टूटी दीप की, सुणियो मेरा पीव ॥
सुणियो मेरा पीव, मांस को खाणों छोड़े ।
पूरण देवे प्रेम, जीव सब भेला दौड़े ॥
कहे सोनी हरिचंद, फाटगो पाछो सीव ।
ऐ राजां का दल हता, ऐ फौजां के जीव ॥ १२८ ॥

बार-बार कांई लिखत हूँ, आप सरब गुण जाण ।
मालिक नामा एक है, ज्यां आदू वेद पुराण ॥
ज्यां आदू वेद पुराण, भ्रम तो ज्यां सूं भागे ।
देख धरण को रुप, वस्त जद पावे सागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर माया माण ।
बार-बार कांई लिखत हूँ, आप सरब गुण जाण ॥ १२९ ॥

चेतन वेकर चालजो, सब ही होणा एक ।
राजेश्वर सुख साहबी, बलीखान और भेख ॥
बलीखान और भेख, हिंदवा जो सुख चावो ।
अंग्रेजां बुधवान, पंच कर मांय मिलावो ॥
कहे सोनी हरिचंद, अकल सूं रेसी टेक ।
चेतन वेकर चालजो, सब ही होणा एक ॥ १३० ॥

फौज राक्षसी दीप में, आणे देणा नांही ।
फौज संभालो आप की, सात दीप के मांही ॥
सात दीप के मांही, खान राजेश्वर मिलके ।
फेर खलीता भेज, और भी पाया चलके ॥
कहे सोनी हरिचंद, कहत हूँ गुण के तांही ।
फौज राक्षसी दीप में, आणे देणा नांही ॥ १३१ ॥

वाणा चिट्ठी भेज के, गुपत मंगासी फौज ।
रोग जाल कर जगत पे, करी राज पर हौज ॥
करी राज पर हौज, मुलक लेणे के खातिर ।
पैसा इनके बहोत, समझलो राजा चतुर ॥
कहे सोनी हरिचंद, दुष्ट को काड़ो खोज ।
वाणा चिट्ठी भेज के, गुपत मंगासी फौज ॥ १३२ ॥

पैली वाणा कैद करो, पीछे बांधो कार ।
ईनकु खोल्या जीवता, जद डूबो संसार ॥
जद डूबो संसार, खाड़ में इनकूं बूरो ।
उपर कांटा घाल, दाबदो उपर धूड़ो ॥
कहे सोनी हरिचंद, बंद कर ज्यांकी नार ।
पैली वाणा कैद करो, पीछे बांधो कार ॥ १३३ ॥

आप सर्व गुण जाणते, आप अकल के कोट ।
न्याय धरम को कीजिये, करो लाडुवा गोठ ॥
करो लाडुवा गोठ, जनोइयां धारण कीजे ।
क्षत्री धरम संभाल, गंगा का प्याला पीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की लीजे ओट ।
आप सर्व गुण जाणते, आप अकल के कोट ॥ १३४ ॥

जीव मार बल देत है, चेत मसाणा भूत ।
यूं चौरासी जागती, वहां बलखावे दूत ॥
वहां बलखावे दूत, जठा सूं इंद्र बंदे ।
करे धरण का होम, उसी कूं वाणा बंदे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत की काड़ी कूत ।
जीव मार बल देत है, चेत मसाणा भूत ॥ १३५ ॥

सूरज सामो मांडते, जैसे अगनी काच ।
वहां चौरासी चलत है, यहां देखते तास ॥
यहां देखते तास, मंतरा जादू साजे ।
वहां होत है होम, बड़ा और करते खाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, मांस मद रखते पास ।
सूरज सामो मांडते, जैसे अगनी काच ॥ १३६ ॥

इस विद जादू चलत है, कियो मुलक में नाश ।
बल भेजंते वाणिया, लख चौरासी पास ॥
लख चौरासी पास, राश बारां पे चाले ।
करे नाभ पर होम, रगत का प्याला डाले ॥
कहे सोनी हरिचंद, चोर है वाणा खास ।
इस विद जादू चलत है, कियो मुलक में नाश ॥ १३७ ॥

लख चौरासी जून है, ज्यांकी राशी बार ।
होम करे एक राश पे, सात लाख पर मार ॥
सात लाख पर मार, रंग पांचों के माथे ।
वो है टीपण ज्ञान, ब्राह्मणा मांगे खाते ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में ऐसा कार ।
लख चौरासी जून है, ज्यांकी राशी बार ॥ १३८ ॥

करोड़ अठारह जून है, सब तरवर की साख ।
होम करे एक राश पे, डेढ़ करोड़ की खाक ॥
डेढ़ करोड़ की खाक, गुण तीनों के पूठे ।
करे धरण का होम, रोग सूं कीड़ा उठे ॥
कहे सोनी हरिचंद, ब्रह्म सूं केवां भाख ।
करोड़ अठारह जून है, सब तरवर की साख ॥ १३९ ॥

बार-बार कांई लिखत हूँ, काथ बिगड़ियो खूब ।
केई बनाया कोढ़िया, केई जणां के ढूब ॥
केई जणां के ढूब, सीपला बाड़ा ओंधा ।
ताव तेजरा रोग, जाल से पड़ते मांदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, मरे कोई जेहरी झूंब ।
बार-बार कांई लिखत हूँ, काथ बिगड़ियो खूब ॥ १४० ॥

सिरदारां रंग सायबी, सिरदारां सूं राज ।
सिरदारां कूं तोड़िया, जदी बिगड़ियो काज ॥
जदी बिगड़ियो काज, जोर बनियों को लागो ।
राजा की मति फेर, पांव कूं धरियो आगो ॥
कहे सोनी हरिचंद, कुटूम्ब सूं रेसी लाज ।
सिरदारां रंग सायबी, सिरदारां सूं राज ॥ १४१ ॥

वजीर चाकर वाजते, सिंग वाजते नांही ।
सिंग सरुपी आप हो, के सिरदारां मांही ॥
के सिरदारां मांही, सिंग सिरदारां वाजे ।
फौजां घुरे निसाण, शेर ज्यूं दल में गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, लाज सिरदारां तांही ।
वजीर चाकर वाजते, सिंग वाजते नांही ॥ १४२ ॥

मच्छिया डेडक मारते, ज्योंका करते तोर ।
घर-घर आतम मारते, या मानवी या खोर ॥
या मानवी या खोर, जोर जादू को लागो ।
कियो वाणिये जाल, जाय के बैठो आगो ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय की रखणा दौड़ ।
मच्छिया डेडक मारते, ज्योंका करते तोर ॥ १४३ ॥

सब पृथ्वी का जीव है, किणी बनाया नांही ।
करोड़ अठारह तरवरां, जड़ चेतन के तांही ॥
जड़ चेतन के तांही, जीव कूं नहीं सताता ।
अन्न फल होता बहोत, लायके सब ही पाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, दीप सातां के मांही ।
सब पृथ्वी का जीव है, किणी बनाया नांही ॥ १४४ ॥

काचा फल नहीं तोड़ते, बीज उगता नांय ।
पाका बीजग उगते, सब ही धरण के मांय ॥
सब ही धरण के मांय, उमरों पूरी करता ।
हतो धरण में जोर, मांगीया इंद्र वरता ॥
कहे सोनी हरिचंद, तरवरा सबके तांय ।
काचा फल नहीं तोड़ते, बीज उगता नांय ॥ १४५ ॥

हिन्दू अपणा दीन है, मुसलमान है भाई ।
एक मांई का जनमीया, एक होवती दाई ॥
एक होवती दाई, एक माता का जाया ।
हता भेद में एक, खुराक सूं दो देखाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, अकल सूं कळा हटाई ।
हिन्दू अपणा दीन है, मुसलमान है भाई ॥ १४६ ॥

गरभ स्वास कूं लेत है, माता के प्रताप ।
लख चौरासी जून है, आद धरण मां-बाप ॥
आद धरण मां-बाप, गरभ में आतम आया ।
धरणी के प्रताप, स्वास में स्वास समाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो आपो आप ।
गरभ स्वास कूं लेत है, माता के प्रताप ॥ १४७ ॥

बिन माता नहीं होवता, जीवों का मंडाण ।
इंदर रुपी आप हो, बिजग रा बंदाण ॥
बिजग रा बंदाण, बरस के दूरा जावे ।
पण बीजग रा सुख-दुख, गर्भ में माता पावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पृथ्वी इण विद जाण ।
बिन माता नहीं होवता, जीवों का मंडाण ॥ १४८ ॥

सो माता मर जात है, गर्भ जीवता नांही ।
माता रुपक एक है, जीव गरभ के मांही ॥
जीव गर्भ के मांही, जिणे सूं जोखम पावे ।
वो पृथ्वी कूं रोग, सोई वो अपने आवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुख सब जीवों तांई ।
सो माता मर जात है, गर्भ जीवता नांही ॥ १४९ ॥

सिरदारां के जन्मती, बेटी घर के द्वार ।
कोईक कन्या मारते, यो कुटूम्ब पर भार ॥
यो कूटूम्ब पर भार, करम सोई बनिये कीदा ।
यूं डूबा सिरदार, जहर का प्याला पीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप से डूबा कार ।
सिरदारां के जन्मती, बेटी घर के द्वार ॥ १५० ॥

क्षत्री टूटा रिजक सूं, हुई कमायां बंद ।
जिण सूं कन्या मारते, कियो वाणिये फंद ॥
कियो वाणिये फंद, कठा सूं जेवर लावे ।
बणकर आवे वींद, जके तो लेणा चावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये घाली गंध ।
क्षत्री टूटा रिजक सूं, हुई कमायां बंद ॥ १५१ ॥

बकरा पाड़ा मार के, लेत खालड़ी चीर ।
वो दरखत पर डालते, प्राप्त होता वीर ॥
प्राप्त होता वीर, झाड़ में भूत दिखावे ।
मारे लोह की कील, रोग दरखत कूं आवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप के चाले तीर ।
बकरा पाड़ा मार के, लेत खालड़ी चीर ॥ १५२ ॥

छल कर राक्षस मारीया, आगे केईक वार ।
वे वाणा का कुळ हता, अपणे थे अवतार ॥
विष्णु थे अवतार, ज्यां सूं ए नहीं टलीया ।
फौज राक्षसी लाय, मानवीं अपणा छलीया ॥
कहे सोनी हरिचंद, शस्त्रां चीरो धार ।
छल कर राक्षस मारीया, आगे केईक वार ॥ १५३ ॥

आई वगत वो आगली, समझो राज जरुर ।
बलीखान सब चेतजो, पड़यो काम करुर ॥
पड़यो काम करुर, निंद तो कैसे आवे ।
कियो राक्षसे भेल, रोटियां कैसे भावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, करो वाणा की धूड़ ।
आई वगत वो आगली, समझो राज जरुर ॥ १५४ ॥

इण परवाणे वाणिये, दी जगत कूं मार ।
सोनी हरिचंद कहत है, सुणियो राज द्वार ॥
सुणियो राज द्वार, जगत के सड़ो लगायो ।
ज्यूं कोठी में धान, जीवड़े सब ही खायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, दुख को नांही पार ।
इण परवाणे वाणिये, दी जगत कूं मार ॥ १५५ ॥

आतम रुपी वेद कूं, सुणियो चित्त लगाय ।
पृथ्वी आतम जाणजो, सभी ब्रह्म के मांय ॥
सभी ब्रह्म के मांय, आसरो धरणी मां को ।
धरणी के प्रताप, जगत में तिरते लाखों ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण कूं शीश नमाय ।
आतम रुपी वेद कूं, सुणियो चित्त लगाय ॥ १५६ ॥

बकरी का गुण जाणिये, गुण बकरी का आठ ।
दूध दही छास माखणा, और घीरत का ठाठ ।
और घीरत का ठाठ, मींगणी देती खालां ॥
और देवती ऊन, ठंड में कांबळ ढालां ॥
कहे सोनी हरिचंद, खावते पापी इनकूं काट ।
बकरी का गुण जाणिये, गुण बकरी का आठ ॥ १५७ ॥

आठ गुणों की गावड़ी, दूध दही घी छास ।
और माखणा खालड़ी, दर्शन को प्रकाश ॥
दर्शन को प्रकाश, नांदिया पोते जीणती ।
और गोबरी देख, गुण आठों की गिनती ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुणों कूं हरदम वांच ।
आठ गुणों की गावड़ी, दूध दही घी छास ॥ १५८ ॥

भैंसों का गुण जाणिये, गुण भैंसों का सात ।
घीरत दूध दही मांखणा, छास जगत कूं पात ॥
छास जगत कूं पात, खालड़ी गोबर देती ।
बच्चा जिणती फेर, वाट में सीधी वेती ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीमती तरवर पात ।
भैंसों का गुण जाणिये, गुण भैंसों का सात ॥ १५९ ॥

घेटी का गुण आठ है, छास माखणा दही ।
घीरत दूध और मींगणी, जगत मानणा सही ॥
जगत मानणा सही, खालड़ी देती ऊनी ।
भेड़ मार के खाय, खुदा के मानव खूनी ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुरुजी लेखा लेई ।
घेटी का गुण आठ है, छास माखणा दही ॥ १६० ॥

बकरा का गुण पांच है, बीज आद से जोय ।
वो ही बीज कूं बोवता, बकरा बकरी होय ॥
बकरा बकरी होय, खालड़ी ऊनी देता ।
और मींगणी होय, उसी का खातर वेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, बकरे कूं नहीं मारणा कोय ।
बकरा का गुण पांच है, बीज आद से जोय ॥ १६१ ॥

घेटा का गुण पांच है, बीज घेट के हाथ ।
वो ही बीज कूं बोवता, नर मादा होय जात ॥
नर मादा होय जात, मींगणी ऊनी देता ।
और खालड़ी देख, ढोलकी मरदंग वेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, भेड़ की सदा गरीबी जात ।
घेटा का गुण पांच है, बीज घेट के हाथ ॥ १६२ ॥

सात गुणों का पाड़िया, बीज खाल परवाण ।
हल गाड़ी और बाड़ियां, बोज लदे सो जाण ॥
बोज लदे सो जाण, गोबरी हरदम देता ।
करे जगत का काम, मानवी सूंरा केता ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख भैंसा की खाण ।
सात गुणों का पाड़िया, बीज खाल परवाण ॥ १६३ ॥

बैलों का गुण ओलखो, आठ कमायां देत ।
हलगाड़ी और पोठीया, फेर घांणीया वेत ॥
फेर घांणीया वेत, खालड़ी गोबर देता ।
असल बैल को बीज, फेर भी गाड़ी वेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, बैलों का सदा निर्मला खेत ।
बैलों का गुण ओलखो, आठ कमायां देत ॥ १६४ ॥

खालों का गुण बहोत है, खाल बड़ी गुणवान ।
ढोल नगारा नोपता, घोड़े का सामान ॥
घोड़े का सामान, पखालां रसीयों जूती ।
तासा मरदंग म्यान, दीवड़ियां जल भर सुती ॥
कहे सोनी हरिचंद, बेल के हलगाड़ी का सामान ।
खालों का गुण बहोत है, खाल बड़ी गुणवान ॥ १६५ ॥

नव गुणों की गावड़ी, सिरे गऊ परवाण ।
खाल गोबरी पुंछड़ा, सिरे नांदिया जाण ॥
सिरे नांदिया जाण, दूध दही मांखण देती ।
घीरत छास दे पूर, बड़ी मां दुनिया कहती ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां का सदा नाम निरवाण ।
नव गुणों की गावड़ी, सिरे गऊ परवाण ॥ १६६ ॥

गैंडा का गुण कहत हूँ, चार गुणों की चाल ।
भूप करे असवारियां, जबर होत है ढाल ॥
जबर होत है ढाल, मोल भी पूरा देती ।
होवे युद्ध संग्राम, ढाल जद आड़ी रेती ॥
कहे सोनी हरिचंद, पुरुष कूं करे युद्ध में न्याल ।
गैंडा का गुण कहत हूँ, चार गुणों की चाल ॥ १६७ ॥

कुंजर का गुण तीन है, पैल राज असवार ।
रुप दिखावे राज का, खड़ा रहत है द्वार ॥
खड़ा रहत है द्वार, दांत भी कारज आवे ।
और देख तीसरा गुण, फेर भी लादां लावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीमते पला पीपला चार ।
कुंजर का गुण तीन है, पैल राज असवार ॥ १६८ ॥

घोड़ा का गुण पांच है, रखे बड़ों की रीत ।
भूप करे असवारियां, करे युद्ध में जीत ।
करे युद्ध में जीत, किसी का बोजा घाले ।
घोड़ा करे किलोल, कोईक वे बगीयां चाले ॥
कहे सोनी हरिचंद, कोईक वे कूदे भीत ।
घोड़ा का गुण पांच है, रखे बड़ों की रीत ॥ १६९ ॥

सो गैंडी सो हस्तणी, सो घोड़ी गुणवंत ।
नर नारी में होवता, यो आद को पंथ ॥
यो आद को पंथ, दूध माता का धावे ।
मरद बीज प्रकाश, मांदिया बच्चा लावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, नीपजे हाड़ मांस लोही दंत ।
सो गैंडी सो हस्तणी, सो घोड़ी गुणवंत ॥ १७० ॥

ऊंटो का गुण कहत हूँ, आठ कमाया जोय ।
हल गाड़ी और मींगणा, पुरुष बैठता दोय ॥
पुरुष बैठता दोय, कतारां बोजा चाले ।
असल बीज फेर ऊन, दूध पीणे कूं घाले ॥
कहे सोनी हरिचंद, ऊंटणी देव सरुपी होय ।
ऊंटो का गुण कहत हूँ, आठ कमाया जोय ॥ १७१ ॥

खर गधा और रासबा, नाम तीन नर एक ।
कोईक ऊपर बैठता, बोझ लदे सो देख ॥
बोझ लदे सो देख, रासबा बीजग वावे ।
वो ही बीज प्रकाश, रासबी बच्चा लावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुण चारों की रेख ।
खर गधा और रासबा, नाम तीन नर एक ॥ १७२ ॥

मानव का गुण तीन है, दया न्याय और नाम ।
तीन गुणां कूं छोड़ के, करे हरामी काम ॥
करे हरामी काम, बुध जादू से फेरी ।
पाप चलायो पूर, वाणिये माया घेरी ॥
कहे सोनी हरिचंद, चराचर बोले राम ।
मानव का गुण तीन है, दया न्याय और नाम ॥ १७३ ॥

अनेक गुण तरवर तणा, जगत आसरो ऐ ।
पान फूल फल छांयड़ी, लाख धूप अर दे ॥
लाख धूप अर दे, पांच रंग फेरु देता ।
दूध कपासी तेल, गूंद भी इसमें वेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये लियो ज्यांको सेह ।
अनेक गुण तरवर तणां, जगत आसरो ऐ ॥ १७४ ॥

लकड़ी का गुण बहोत है, वरणी जावे नांय ।
खाती रकम बनावता, और खरादी तांय ॥
और खरादी तांई, कूंपला मेर बनावे ।
कैसा करुं वखाण, पार इनका नहीं पावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, बहोत गुण लकड़ी मांय ।
लकड़ी का गुण बहोत है, वरणी जावे नांय ॥ १७५ ॥

अठारह करोड़ कुल तरवरां, चौरासी लाख कुल जीव ।
जड़ चेतन दोय गर्भ में, सुणियो मेरा पीव ॥
सुणियो मेरा पीव, धरण में सब गुण बसीया ।
देख कुदरती खेल, कुदरती सब कुळ रचीया ॥
कहे सोनी हरिचंद, टूटगा चौला सीव ।
अठारह करोड़ कुल तरवरां, चौरासी लाख कुल जीव ॥ १७६ ॥

लख चौरासी जून की, ज्योत कला है एक ।
पवन एक पृथ्वी तणा, जो सूरत बांध के देख ॥
सूरत बांध के देख, प्राण पृथ्वी का वाजे ।
सुणलो एक आवाज, पिंड में पृथ्वी गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो पृथ्वी आप अलेख ।
लख चौरासी जून की, ज्योत कला है एक ॥ १७७ ॥

माणक रतन तांबड़ा, हीरा पन्ना होत अणमोल ।
तांबा चांदी सोवरण, लोह सीसा अणतोल ॥
लोह सीसा अणतोल, लूंण और पत्थर पारा ।
अगन पवन जल चंद्र, भाण की ज्योत अपारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सरब गुण पृथ्वी बोल ।
माणक रतन तांबड़ा, हीरा पन्ना होत अणमोल ॥ १७८ ॥

चार रुप है अगन के, चार रुप को वाय ।
चार रुप जल आप है, सभी पृथ्वी मांय ॥
सभी पृथ्वी मांय, द्वादश पृथ्वी वाजे ।
सब जल को परिवार, आहार बिन आतम दाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण मां पाणी पाय ।
चार रुप है अगन के, चार रुप को वाय ॥ १७९ ॥

एक अगन रुप पत्थर में, एक रुप सब पंड ।
एक अगन रुप तरवरां, एक भाण नवखंड ॥
एक भाण नवखंड, चराचर अगनी बोले ।
नहीं समझ बिन भेद, साध वे घर-घर डोले ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख पृथ्वी का खंड ।
एक अगन रुप पत्थर में, एक रुप सब पंड ॥ १८० ॥

एक रुप जल आप है, एक रुप जल चंद ।
दोय रुप जड़ चेतना, चार रुप कूं बंद ॥
चार रुप कूं बंद, रची सब जल की माया ।
घट-घट बोले नीर, धरण में सब गुण आया ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीमते जल में रंद ।
एक रुप जल आप है, एक रुप जल चंद ॥ १८१ ॥

एक पवन रुप चंद्र में, एक पवन में भाण ।
दोय पवन जड़ चेतनां, चार पवन कूं जाण ॥
चार पवन कूं जाण, सभी तिर्गुण की माया ।
पवन-पवन सब एक, सभी तिर्गुण में आया ॥
कहे सोनी हरिचंद, असल में तिर्गुण जाण ।
एक पवन रुप चंद्र में, एक पवन में भाण ॥ १८२ ॥

अगन पवन जल तीन को, परिब्रह्म है एक ।
परिब्रह्म गुण तीन में, ज्यांका रुप अनेक ॥
ज्यांका रुप अनेक, तंत पांचों की माया ।
पांच तंत गुण तीन, आठ एकण में आया ॥
कहे सोनी हरिचंद, रोशनी ज्यांकी देख ।
अगन पवन जल तीन को, परिब्रह्म है एक ॥ १८३ ॥

आप तंत में हाड़ है, तेज तंत में खून ।
पृथ्वी तंत में खालड़ी, श्याम तंत में सुन ॥
श्याम तंत में सुन, वाय की सब ही नाड़ी ।
देख कुदरती खेल, कुदरती बणी आ वाड़ी ॥
कहे सोनी हरिचंद, लख चौरासी जून ।
आप तंत में हाड़ है, तेज तंत में खून ॥ १८४ ॥

पांच तंत है वजर का, सोई धरण को अंग ।
पांच तंत कच्चा चले, जो चौरासी लाख कुल रंग ॥
चौरासी लाख कुल रंग, तीन गुण कच्चा देखो ।
तीन वजर गुण जाण, ब्रह्म में किजे लेखो ॥
कहे सोनी हरिचंद, तीन पांचां को संग ।
पांच तंत है वजर का, सोई धरण को अंग ॥ १८५ ॥

चांदी तत्व आपको, पृथ्वी कंचन जाण ।
तांबो तेजी जाणिये, लोह आकाशी खाण ॥
लोह आकाशी खाण, वाय में रांगा सीसा ।
देख धातु को रुप, वचन कूं बोलो वीसा ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख पांचां की डाण ।
चांदी तत्व आपको, पृथ्वी कंचन जाण ॥ १८६ ॥

पर्वत सफेद मिट्टीयां, यो आपको तंत ।
पीली मिट्टी पृथ्वी, सुणियो मेरा मीत ॥
सुणियो मेरा मीत, वाय की हरी मिट्टी ।
गेरुं मिट्टी लाल, तेज गेरुं की बट्टी ॥
कहे सोनी हरिचंद, श्याम मिट्टी आकाशी पंथ ।
पर्वत सफेद मिट्टीयां, यो आपको तंत ॥ १८७ ॥

हरा पान जंगाल है, तेज कसूंबल रंग ।
गली रंग आकाश को, रुई सफेदो अंग ॥
रुई सफेदो अंग, पृथ्वी केसर पीलो ।
दूजो हल्दी रंग, उसी में थोड़ो सीलो ॥
कहे सोनी हरिचंद, पांच तरवर के संग ।
हरा पान जंगाल है, तेज कसूंबल रंग ॥ १८८ ॥

आप तंत का पवन पे, सोला आंगळ मेल ।
पृथ्वी तंत का पवन पे, द्वादश को खेल ॥
द्वादश को खेल, वाय आठों में आयो ।
तेजी आंगल चार, सुन में जाय ठेरायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, तंत कूं सेठा झेल ।
आप तंत का पवन पे, सोला आंगळ मेल ॥ १८९ ॥

पांच मिट्टी की आत्मा, जून चौरासी लाख ।
पांच मिट्टीयां वजर की, बड़ी धरण की साख ॥
बड़ी धरण की साख, वजर की पांचू धातु ।
तरवर का रंग पांच, अकल की देखो बातां ॥
कहे सोनी हरिचंद, तंत परखण कूं नाक ।
पांच मिट्टी की आत्मा, जून चौरासी लाख ॥ १९० ॥

सात कमल है देह में, सोई द्वीप है सात ।
सोई चंद्र और भाण है, सोई नासका पात ॥
सोई नासका पात, द्वार नवखंड की माया ।
सोई ओज दरियाव, उसी में आहार समाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, हाड़ गिरवर जड़ पात ।
सात कमल है देह में, सोई द्वीप है सात ॥ १९१ ॥

जैसे थाणा द्रोब का, जड़ चोवंता जाय ।
जड़-जड़ तांता छोड़ती, ज्यांका कमल केवाय ॥
ज्यांका कमल केवाय, पिंड में सातूं थाणा ।
शंकर करते ध्यान, उसी ने कमल पहचाणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो आतम मांय ।
जैसे थाणा द्रोब का, जड़ चोवंता जाय ॥ १९२ ॥

पहेला थाणा नाभ का, और गुदा इंदरी दोय ।
चौथा हिरदा जाणिये, कंठ पांचमां जोय ॥
कंठ पांचमां जोय, तरवणी छठां थाणा ।
शीश सातमां जाण, उसी में बाज पहेचाणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, तार-तार में पोय ।
पहेला थाणा नाभ का, और गुदा इंदरी दोय ॥ १९३ ॥

दोय कमल है नेतरां, दोय कमल है कान ।
दोय कमल है नासका, एक सरस्वती पान ॥
एक सरस्वती पान, देख सातां की माया ।
सोई धरण आकार, सोई अपणे में आया ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख सातां की तान ।
दोय कमल है नेतरां, दोय कमल है कान ॥ १९४ ॥

पग-पग गुण पृथ्वी तणा, कांई करुं वर्णन ।
ब्रह्मा विष्णु वरण गये, तोई न पायो अंत ॥
तोई न पायो अंत, ध्यान कर शंकर वरणी ।
देव-देव महादेव, पूरती ज्यांकी करणी ॥
कहे सोनी हरिचंद, वरणते ही मर गये संत ।
पग-पग गुण पृथ्वी तणा, कांई करुं वर्णन ॥ १९५ ॥

महाकला थी पृथ्वी, अकल कला थी जून ।
गुप्ति राक्षसी वाणिये, कियो जमीं को खून ॥
कियो जमीं को खून, जून में अगन लगाड़ी ।
गुपति होम कराय, पाप सूं कला बिगाड़ी ॥
कहे सोनी हरिचंद, दीन दोय पकड़ बैठ गये मून ।
महाकला थी पृथ्वी, अकल कला थी जून ॥ १९६ ॥

बूचड़ मारत बोकड़ा, गऊवां मारत फेर ।
वोरा बणगा वाणिया, दियो तराजू सेर ॥
दियो तराजू सेर, जगत में मांस बिकावे ।
राजा हुआ अचेत, मांस कूं सब ही खावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये दियो हाथ में मेर ।
बूचड़ मारत बोकड़ा, गऊवां मारत फेर ॥ १९७ ॥

ये रतन के ऊपरे, कियो वाणिये काल ।
रतनां कूं तोड़ावते, कांई जगत री बाल ॥
कांई जगत री बाल, अन्न घी किनका लावों ।
और रतनो उपर मार, किस विद संपत पावों ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की बांधो पाळ ।
ये रतन के ऊपरे, कियो वाणिये काल ॥ १९८ ॥

ये रतन के आसरे, जगत करंते मौज ।
सब दर्शन की आ हुनरी, सब राजा की फौज ॥
सब राजा की फौज, राज रतनां सूं चलता ।
रतनां के प्रसंग, जगत कूं अन्न-जल मिलता ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम का बांधो होज ।
ये रतन के आसरे, जगत करंते मौज ॥ १९९ ॥

लोक वावते खेतीयां, भरे कोठारां धान ।
लोक तोड़िया राज का, नहीं बधेला मान ।
नहीं बधेला मान, लोक तो रोटी देवे ।
बनिया राक्षस जात, एक रा सौ-सौ लेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये ली जगत की स्यान ।
लोक वावते खेतीयां, भरे कोठारां धान ॥ २०० ॥

अरबदगढ़ के नाथ है, केसरसिंग महाराव ।
गादी शिम्भूनाथ की, नित दर्शन की चाव ॥
नित दर्शन की चाव, जगत सब दर्शन आवे ।
ज्यां निकलंकी रुप, संत जन मंगल गावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पूज शिम्भू का पांव ।
अरबदगढ़ के नाथ है, केसरसिंग महाराव ॥ २०१ ॥

महा सुरे सिरदारसिंगजी, आप जोधाणे नाथ ।
महा तपस्वी प्रतापसिंगजी, लखे न्याय की बात ॥
लखे न्याय की बात, तपेश्वर दोनुं केवा ।
गुरु जलंधरनाथ, देव कूं हरदम सेवा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सभी सुख संपत पात ।
महा सुरे सिरदारसिंगजी, आप जोधाणे नाथ ॥ २०२ ॥

जयपुर माधोसिंगजी, महासूरे रजपूत ।
गादी राजाराम की, डरे जम और दूत ।
डरे जम और दूत, बड़ी जयपुर की माया ।
मानसिंग महाराज, भूतणी देवी लाया ।
कहे सोनी हरिचंद, मार भूतण पे जूत ।
जयपुर माधोसिंगजी, महासूरे रजपूत ॥ २०३ ॥

राणा फतमलसिंगजी, ज्यां एकलिंग की पूज ।
रिद्धि-सिद्धि नित बांटते, सभी बात की बुझ ॥
सभी बात की बुझ, शहर उदीयापुर बंका ।
राणा फतमलसिंग, ज्यां का बाजत डंका ॥
कहे सोनी हरिचंद, रखंते बड़ी धरम की सूज ।
राणा फतमलसिंगजी, ज्यां एकलिंग की पूज ॥ २०४ ॥

सदा न्याय शिवगंज में, दलपत न्याय स्वरुप ।
सायब पदवी जाणिये, दलपत एक अनुप ॥
दलपत एक अनुप, सायबा तेज सवाया ।
पूज्य शम्भूनाथ, राज महा पदवी पाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, पिताजी तेजसिंग बड़े भूप ।
सदा न्याय शिवगंज में, दलपत न्याय स्वरुप ॥ २०५ ॥

बालावत महा सुरमा, भभूतसिंग राठौर ।
लिया प्याला प्रेम से, पकड़ ज्ञान की डोर ॥
पकड़ ज्ञान की डोर, बार वाड़े खुद ठाकुर ।
वाणां कूं ललकार, मांड घोड़े पे पाखर ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां घर अकल रुप अंग जोर ।
बालावत महा सुरमा, भभूतसिंग राठौर ॥ २०६ ॥

नरपत गंगासिंगजी, बस्ती बिकानेर ।
राठौरा सुख सायबी, सदा सुखी सब शहर ॥
सदा सुखी सब शहर, इष्ट विष्णु का जाणु ।
पूजे शम्भूनाथ, प्रेम कर नाम वखाणु ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां के सदा सुखी सब शहर ।
नरपत गंगासिंगजी, बस्ती बिकानेर ॥ २०७ ॥

सोनारो शरवरगणु, नर नारायण नाम ।
जन्म भोम कर हाकमी, अदल न्याय कर काम ॥
अदल न्याय कर काम, भाई बदरीजी कैसे ।
अकल रुप अंग चैन, देव की मूरत जैसे ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां के सदा मदद में श्याम ।
बाड़मेरा सोनारा में, नर नारायण नाम ॥ २०८ ॥

शिवगंज में गुणवंत है, सोनी भीमाराम ।
बेटा ज्यांका ज्ञान में, सोनी खुशाल नाम ॥
सोनी खुशाल नाम, नाम को रटे सोनी सूरा ।
हीरा काला गोत, पाप से वेगा दूरा ॥
कहे सोनी हरिचंद, हटा सोनी किया धरम का काम ।
शिवगंज में गुणवंत है, सोनी सालगराम ॥ २०९ ॥

लख चौरासी कुण्डियां, देखी अनोपदास ।
गुपत पाप कूं देख के, वेद बनायो खास ॥
वेद बनाायो खास, कलपना पोते कीदी ।
गुपत पाप कूं देख, वेद में वातों लीदी ॥
कहे सोनी हरिचंद, वांच के होना पास ।
लख चौरासी कुण्डियां, देखी अनोपदास ॥ २१० ॥

अनोपदास कलपीज के, करी जगत में कूक ।
जुग तारण की वात है, कांई देखते चूक ॥
कांई देखते चूक, कान राजा नहीं देते ।
पड़ी राज में भूल, किसी विद प्रजा चेते ॥
कहे सोनी हरिचंद, वांचलो धरम न्याय की बुक ।
अनोपदास कलपीज के, करी जगत में कूक ॥ २११ ॥

मुलकां हेला देवता, वरस वे गया तीस ।
घर-घर कूके अनोपदास, पुर पचायो शीश ॥
पुर पचायो शीश, जगत में भूले राजा ।
घट में घौर अंधेर, किस विद सरे काजा ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये डुबोविया जगदीश ।
मुलकां हेला देवता, वरस वे गया तीस ॥ २१२ ॥

हेला दे-दे अनोपदास, पुर तपायो पंड ।
नहीं धूप कूं देखते, नहीं देखते ठंड ॥
नहीं देखते ठंड, हाथ से महेनत करते ।
रस्ते झाड़ू काड, टोकरी सिर पे धरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये डुबोविया नवखंड ।
हेला दे-दे अनोपदास, पुर तपायो पंड ॥ २१३ ॥

मैं तो आंधा आँख से, अनोपदास गुरु पाये ।
गुपत पाप की कुंडियां, अनोपदास गम लाये ॥
अनोपदास गम लाये, मोये देखन में आयो ।
मोय कलपायो बहोत, कलावन फरतो धायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुरुजी सुता ब्रह्म जगाये ।
मैं तो आंधा आँख से, अनोपदास गुरु पाये ॥ २१४ ॥

एरणपुर में सुटरा, लखमण था गुणवंत ।
प्रेम खवास प्रीत से, हुआ हीज पूरा संत ॥
हुआ हीज पूरा संत, धरम में दोनों साचा ।
मेणा डुंगा संत, गाम नगावी में वासा ॥
कहे सोनी हरिचंद, चालते धरम वाट के पंथ ।
एरणपुर में सुटरा, लखमण था गुणवंत ॥ २१५ ॥

लिखमा धुरीया भगत भीलों में, पोकिया आतम देव ।
लखमा धुरीया प्रेम प्रीत से, कर सतगुरु की सेव ॥
कर सतगुरु की सेव, आळी कां धूड़ा हरना ।
गलबा भी परमार, सर्व के निकलंग चरणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, नाम तो सदा धरम का लेव ।
लिखमा धुरीया भगत भीलों में, पोकिया आतम देव ॥ २१६ ॥

राम-राम लिखु आप कूं, लिखु जगत श्रीराम ।
मक्का मदीना द्वारका, पृथ्वी कूं प्रणाम ॥
पृथ्वी कूं प्रणाम, आद से कुल उपाया ।
हिन्दू-मुसलमान, एक माता का जाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण मां सब का धाम ।
राम-राम लिखु आप कूं, लिखु जगत श्रीराम ॥ २१७ ॥

सदा सरस्वती गवरदा, सदा गणपति देव ।
ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, सदा करीजे सेव ॥
सदा करीजे सेव, देव अवतारी कहिए ।
सदा गुरु को सेव, चरण में हाजर रहिए ॥
कहे सोनी हरिचंद, नाम गणपति का लेव ।
सदा सरस्वती गवरदा, सदा गणपति देव ॥ २१८ ॥

सदा पृथ्वी देवता, सरब सिद्धि इण मांय ।
अन्नपूर्णा पृथ्वी, और पूरते नांय ॥
और पूरते नांय, हुनरी मानव होता ।
कंचन घड़े सुनार, कोईक वे मोती पोता ॥
कहे सोनी हरिचंद, आद में बोले सांई ।
सदा पृथ्वी देवता, सरब सिद्धि इण मांय ॥ २१९ ॥

सरब गुणां की पृथ्वी, सदा मांई परवाण ।
ज्यां अनोपस्वामी आविया, नकलंगी निरवाण ॥
नकलंगी निरवाण, जगत में करी आनंदा ।
राजा करसी न्याय, न्याय कर मेटी फंदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुणपति सूरत डोर दरवाण ।
सरब गुणां की पृथ्वी, सदा मांई परवाण ॥ २२० ॥

चंद्र भाण दोय ज्योत है, दोय धरण का स्वास ।
ज्यांको जग में तेज है, सोई आपके पास ॥
सोई आपके पास, कला तो ज्यां की वरते ।
चंद्र भाण प्रकाश, मानवी हुनर करते ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख दोनों की तास ।
चंद्र भाण दोय ज्योत है, दोय धरण का स्वास ॥ २२१ ॥

दोनूं दरिया खीर का, सोई धासीया जाण ।
हिरदा सागर तीसरा, चौथा अमी पहचाण ॥
चौथा अमी पहचाण, पांचमा पेडू नेरा ।
दायो बायों अंग, सात का करो विचारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सात दरिया की खाण ।
दोनूं दरिया खीर का, सोई धासीया जाण ॥ २२२ ॥

आहार बरस्यो कुदरती, निर्मल होती देह ।
राक्षस वाणे जाल कर, लियो जगत को छेह ॥
लियो जगत को छेह, राक्षसी वेद उपाया ।
होम मंतरा पाप, जमीं कूं जादू पाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, किस विद आवे मेह ।
आहार बरस्यो कुदरती, निर्मल होती देह ॥ २२३ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, ओरां के अवतार ।
आद धरम कूं पालते, राक्षस उपर मार ॥
राक्षस उपर मार, कूट के दूर उड़ाया ।
वाणा राक्षस बीज, ज्यांका भेद न पाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, पूजंते आतम द्वार ।
ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, ओरां के अवतार ॥ २२४ ॥

वाणे जादू सुपीया, हरणाकुश के हाथ ।
आपा पंथी चालतो, साधु उपर घात ॥
साधु उपर घात, जोर में पूरो आयो ।
जद कोपिया राजा नरसिंग, दुष्ट कूं मार उड़ायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिया गऊवां खात ।
वाणे जादू सुपीया, हरणाकुश के हाथ ॥ २२५ ॥

हरणाकुश के राज में, वाणा करते काम ।
ज्यों दिन राक्षस वाजते, करते काम हराम ॥
करते काम हराम, खावते पाड़ा घेटा ।
पड़ी धणी की मार, वाणिया होकर बैठा ॥
कहे सोनी हरिचंद, दिया सौदागर नाम ।
हरणाकुश के राज में, वाणा करते काम ॥ २२६ ॥

और मानवी जगत में, सभी राम को लोक ।
वाणा राक्षस बीज है, कियो जमीं कूं दोख ॥
कियो जमीं कूं दोख, फेर भी रावण लायो ।
लख चौरासी जाल, वाणिये फेर चलायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, जठा सूं बंदी मौख ।
और मानवी जगत में, सभी राम को लोक ॥ २२७ ॥

सब ही राजा खेलते, सदा राम दल मांय ।
उजल क्षत्री वाजते, मांस खावते नांय ॥
मांस खावते नांय, दूध दही अन्न फल खाता ।
राक्षस करता भेल, शस्त्रां मार उड़ाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुख तो सबके तांय ।
सब ही राजा खेलते, सदा राम दल मांय ॥ २२८ ॥

क्षत्री था दोय खांप का, राक्षस और रघुनाथ ।
रघुकुल के राजवी, राक्षस गऊवा खात ॥
राक्षस गऊवा खात, वाणिया वो ही कुळी का ।
खाते पाड़ा गऊ, वाणिया रंग गळी का ।
कहे सोनी हरिचंद, राक्षसी वाणा जात ।
क्षत्री था दोय खांप का, राक्षस और रघुनाथ ॥ २२९ ॥

हरणाकुश के राज में, कियो जमीं को पाप ।
कीड़ा उठीया रोग का, माछर कुती सांप ॥
माछर कुती सांप, ज्यां का कुल बंधाणा ।
कियो धरण कूं रोग, सायरा जल गंधाणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव कूं देतो ताप ।
हरणाकुश के राज में, कियो जमीं को पाप ॥ २३० ॥

रावण खारो राम पे, कियो जमीं को दोख ।
जाल चलायो वाणिये, दुखी जगत को लोक ॥
दुखी जगत को लोक, रोग वे प्रगट कीदा ।
और किया देवों कूं कैद, कलंक सुरज कूं दीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की कीदी रोक ।
रावण खारो राम पे, कियो जमीं को दोख ॥ २३१ ॥

कीड़ा ऊठिया रोग से, कई हजारों लाख ।
जुवां ईतरी गींगणा, मांकण बिच्छु माख ॥
मांकण बिच्छु माख, रोग से प्रगट कीदा ।
और हुआ तीड़ पैदास, राम के माथे दीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुमायो जुग रो वाक ।
कीड़ा ऊठिया रोग से, कई हजारों लाख ॥ २३२ ॥

रावण वाणे जगत में, रोग चलाया नव ।
दोखो कीदो धरण कूं, दियो देही कूं दव ॥
दियो देही कूं दव, पुरुष की उमर टूटी ।
कंचन लेगा चोर, देखता दुनिया लूंटी ॥
कहे सोनी हरिचंद, मोठ और खाते जव ।
रावण वाणे जगत में, रोग चलाया नव ॥ २३३ ॥

मोतीझरा पाणीजरा, ताव तेजरा चौथ ।
छाळा औरी अचपला, ये देखती मौत ॥
ये देखती मौत, बालक बुढ़ा खाया ।
एकोतरा नव रोग, पाप से जादू आया ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव की तोड़ी आंत ।
मोतीझरा पाणीजरा, ताव तेजरा चौथ ॥ २३४ ॥

ताव चढ़ायो धरण कूं, अन्न तरवरां तांय ।
कीड़ा उठीया रोग से, अन्न फलां के मांय ॥
अन्न फलां के मांय, ऊरणी ईली बाड़ा ।
और हुवा जीव पैदास, मूंग में करते फोड़ा ।
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कूं करते नांय ।
ताव चढ़ायो धरण कूं, अन्न तरवरां तांय ॥ २३५ ॥

ए दोखारा जीवड़ा, ये आद का नांय ।
आद खाण तो तीन है, चौथी परदा मांय ॥
चौथी परदा मांय, रोग से प्रगट होती ।
आद खाण है तीन, दोय है जुग में ज्योती ॥
कहे सोनी हरिचंद, आद में बोले सांई ।
ए दोखारा जीवड़ा, ये आद का नांय ॥ २३६ ॥

रावण जाल चलावियो, ज्यूं चले है जाप ।
बल भेजंते वाणिया, हर दम चाले पाप ॥
हरदम चाले पाप, जड़ चेतन के माथे ।
गुपत चौरासी दूत, मांस और दारु खाते ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुरत कर देखो आप ।
रावण जाल चलावियो, ज्यूं चले है जाप ॥ २३७ ॥

रावणे रोग चलाविया, अजेपाल के नाम ।
अजेपाल के रेवता, सदा पिंड में राम ॥
सदा पिंड में राम, हरामी रावणे कीदी ।
वाणा रावण ढाब, संत के माथे दीदी ॥
कहे सोनी हरिचंद, कराया वाणे काम ।
रावणे रोग चलाविया, अजेपाल के नाम ॥ २३८ ॥

रावण चक्कर वावियो, कबुतरां के बीच ।
अजेपाल के नाम से, तुरंत उड़ायो शीश ॥
तुरंत उड़ायो शीश, रावणे जादू कीदो ।
मंडोवर भरमाय, पिता के माथे दीदो ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिया वोही लंका का नीच ।
रावण चक्कर वावियो, कबुतरां के बीच ॥ २३९ ॥

अदीठ चक्कर चालते, उनका जादू नाम ।
कई उड़ाते पहाड़ कूं, कई उड़ाते धाम ॥
कई उड़ाते धाम, हरामी इन कूं सीखे ।
रोग उठ मर जाय, हाल भी चक्कर दीखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, होवता पाप होम से काम ।
अदीठ चक्कर चालते, उनका जादू नाम ॥ २४० ॥

जादूगर मर जावते, फेर जादू अमर नांही ।
जादू खोरा वाणिया, जादू इनके मांही ।।
जादू इनके मांही, वाणिये अमर कीदो ।
जादू के परताप, जगत कूं धोखो दीदो ।।
कहे सोनी हरिचंद, कहत हूँ सदा अकल के तांई ।
जादूगर मर जावते, फेर जादू अमर नांही ।। २४१ ।।

हरणाकुश रावण कौरवां, कंस पासता नाम ।
देव पीर कूं साधते, आखिर हुआ निकाम ।
आखिर हुआ निकाम, होम तो बनिया करते ।
कला उसी के पास, दूसरा खाली मरते ।।
कहे सोनी हरिचंद, होमिया दिल्ली पासता धाम ।
हरणाकुश रावण कौरवां, कंस पासता नाम ।। २४२ ।।

तिथियां तोड़ी जगत में, करी एक री दो ।
कबुवक भेली सांधते, कला राक्षसी जोय ।
कला राक्षसी जोय, सरोदा झूठा करते ।
और तिथियां उपर होम, जरा कारज नहीं सरते ।
कहे सोनी हरिचंद, ज्ञान पे नहीं लागता मोह ।
तिथियां तोड़ी जगत में, करी एक री दो ।। २४३ ।।

शुकल पक्ष के आद ही, शुक्र सोम गुरु जोय ।
किशन पक्ष के आद ही, शनि मंगल रवि होय ।।
शनि मंगल रवि होय, वार तो छेईज होता ।
बुध कलु के मांय, जीवड़ा खावे गोता ।।
कहे सोनी हरिचंद, ज्योत है चंद्र भांण की दोय ।
शुकल पक्ष के आद ही, शुक्र सोम गुरु जोय ।। २४४ ।।

वार चले जादू चले, वार आद के नांही ।
तिथियां तीस पूरी हती, जुगो जुग के मांही ॥
जुगो जुग के मांही, वार रावण से कीदा ।
रावण बनियां एक, कलंक वारां पे दीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, कला है जुग डुबोवण के तांई ।
वार चले जादू चले, वार आद के नांही ॥ २४५ ॥

बिल्ली पकड़े गोस्त कूं, फेर खोलती नांही ।
यूं पकड़ी वाणिये, नीत पाप के मांही ॥
नीत पाप के मांही, वाणिये सेठी पकड़ी ।
हराम खोले नांही, जुतियां मारो लकड़ी ॥
कहे सोनी हरिचंद, अरज है न्याय करण के तांय ।
बिल्ली पकड़े गोस्त कूं, फेर खोलती नांही ॥ २४६ ॥

वाणा कुक्कड़ होय के, लिया रैण का बोल ।
गौतम सुता नींद में, उठीया नेतर खोल ॥
उठीया नेतर खोल, गंग में न्हावण आया ।
कियो वाणिये जाल, सती कूं कलंक चढ़ाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, समझ बिन रैगी पोल ।
वाणा कुक्कड़ होय के, लिया रैण का बोल ॥ २४७ ॥

पांडव देवत वाजीया, जपे धरम का जाप ।
कौरव बनिया एक हता, गुपत चलायो पाप ।
गुपत चलायो पाप, रोग सूं कीदा वाला ।
वो गौतम के नाम, चन्द्र कूं कीदा काळा ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो आपो आप ।
पांडव देवत वाजीया, जपे धरम का जाप ॥ २४८ ॥

कला हटाई चंद्र की, हुआ अंधेरा घोर ।
धरणी धुजी रोग से, जदी बोलिया मोर ॥
जदी बोलिया मोर, मानवी हेला दीदा ।
हुवो जमीं को पाप, करम तो वाणे कीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में जागे चोर ।
कला हटाई चंद्र की, हुआ अंधेरा घोर ॥ २४९ ॥

अलीया दीमक गुंजरी, कान सलाया फेर ।
ओखीरा सरला घणा, और जवां का ढेर ॥
और जवां का ढेर, रोग पाणी में लागो ।
जल में वेगा सांप, जगत को अंजल भागो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण को दोखो हेर ।
अलीया दीमक गुंजरी, कान सलाया फेर ॥ २५० ॥

पैली काल चलाविया, पीछे राक्षस आय ।
गौतम के घर आविया, वहां रसोया पाय ॥
वहां रसोया पाय, गौतमे काल कढ़ाया ।
कर जादू की गऊ, ऋषि कूं कलंक चढ़ाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणियां जादू लाय ।
पैली काल चलाविया, पीछे राक्षस आय ॥ २५१ ॥

वाणा गुपती होम कर, राव कंस के तांई ।
बुद्धि बिगड़ी पाप से, दया राखतो नांहि ॥
दया राखतो नांहि, पापीये कन्या मारी ।
हुओ धरण कूं रोग, कलेजो फरकत भारी ॥
कहे सोनी हरिचंद, रोग नैत्र के मांहि ।
वाणा गुपती होम कर, राव कंस के तांई ॥ २५२ ॥

प्रगट जादू आणिया, सवा लाख ऊनमान ।
वो गोकुल में नीपना, अवरा तारण कान ॥
अवरा तारण कान, गंग में खेलत बाला ।
जल में अगन लगाय, राम कूं कीदा काळा ॥
कहे सोनी हरिचंद, समझलो हिन्दू खान ।
प्रगट जादू आणिया, सवा लाख ऊनमान ॥ २५३ ॥

आहार बिगड़ियो धरण को, सर्प गंग के मांही ।
मानव आये देखवा, ये नीपना कांही ॥
ये नीपना कांही, नजर में जादू आयो ।
कूद पड़े अवतार, सर्प कूं बाहर लायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धन वे डरते नांही ।
आहार बिगड़ियो धरण को, सर्प गंग के मांही ॥ २५४ ॥

गुपत आत्मा होमते, गुपत चलाते जाल ।
रोग चलाया जगत में, फेर चलायो ब्याज ॥
फेर चलायो ब्याज, वाणिये कीदा खोटा ।
किया गर्भ का होम, बाप पहले मरते बेटा ।
कहे सोनी हरिचंद, दीन दोय समझो आज ।
गुपत आत्मा होमते, गुपत चलाते जाल ॥ २५५ ॥

बलराजा बुध सोच के, वाणा कैद कराय ।
नाम दिया था कलंकी, ताला दिया जड़ाय ।
ताला दिया जड़ाय, दूर थे नर ने नारी ।
हती जन्म की कैद, खोलते नांही बारी ॥
कहे सोनी हरिचंद, भूंगली पाणी पाय ।
बलराजा बुध सोच के, वाणा कैद कराय ॥ २५६ ॥

वाणा जोगी होय के, रहेत पहाड़ के मांय ।
जगन किया बलराजवी, आये जीमवा तांय ॥
आये जीमवा तांय, राज में नांही पावे ।
और कैदी दीजे खोल, नहीं तो पीछा जावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, राज कूं छलिया वांय ।
वाणा जोगी होय के, रहेत पहाड़ के मांय ॥ २५७ ॥

कायल हुआ बलराजवी, दिया ज कैदी खोल ।
गुरु शिखरजी यूं भणे, परो बिगड़सी तोल ॥
परो बिगड़सी तोल, जोगियां खोटी कीदी ।
नहीं जीमें सत जाय, कपट सूं फांसी दीदी ॥
कहे सोनी हरिचंद, फेर भी रैगी पोल ।
कायल हुआ बलराजवी, दीया ज कैदी खोल ॥ २५८ ॥

कैदी खोल्या कैद से, दिया ज माथा मोड़ ।
बलराजा देवलोक हुआ, जद फेर चलाया कोड़ ।
फेर चलाया कोड़, हींजड़ा टाटी बोळा ।
पेचुंटी बद गांठ, कालजा दुखे गोळा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पकड़ियो वाणिये गोढ़ ।
कैदी खोल्या कैद से, दिया ज माथा मोड़ ॥ २५९ ॥

चांदी छाला जांजवा, डमरु वांई खील ।
पग वे गर्मी चीणगीया, सोजा चढ़ता डील ॥
सोजा चढ़ता डील, कालियो वा पण आवे ।
पड़ा रोग सिर दुख, ठंड से अंग धुजावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, अंग में उठे लील ।
चांदी छाला जांजवा, डमरु वांई खील ॥ २६० ॥

हुआ मसुंदी वाणिया, राजा कूं भरमाय ।
दिल्ली गमाई राज से, फेर पासता लाय ॥
फेर पासता लाय, रिया दौनुं में मिलता ।
उजल पंखी होय, बजारां सीधा चलता ॥
कहे सोनी हरिचंद, अनेकां दिया खपाय ।
हुआ मसुंदी वाणिया, राजा कूं भरमाय ॥ २६१ ॥

जैसे जल में लील है, ज्यूं देही में कफ ।
ज्यूं गुजराती हीक है, पित्त वाय और तप ॥
पित्त वाय और तप, आत्मा दोरी होवे ।
उठे सांसा रोग, जड़ां सूं राक्षस खोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जालिया करते जप ।
जैसे जल में लील है, ज्यूं देही में कफ ॥ २६२ ॥

और गबीरां गुंबड़ा, फीया रोग होय जात ।
तणा सीली और सतपड़ा, माल भरीजे हाथ ॥
माल भरीजे हाथ, उलाकां दस्ता लागे ।
मसा भगंदर मरी, ताण सूं हाड़ी भागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणा की देखो घात ।
और गबीरां गुंबड़ा, फीया रोग होय जात ॥ २६३ ॥

नल छिटके और कंठ माल, लूत शीश पर होय ।
नाक निनामि कान, मूल रोग डाड़ में जोय ।
रोग डाड़ में जोय, मसुड़ा फेर भरीजे ।
पीत्त बड़ा के रोग, अंग में आर चढ़ीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वेग सूं मानव रोय ।
नल छिटके और कंठ माल, लूत शीश पर होय ॥ २६४ ॥

और अलाया उरणी, काख बिलाया जोर ।
बिस कांटा और दाद है, वाय गर्म को तोर ॥
वाय गर्म को तोर, इन्दरी धातु जावे ।
बगल खडुके फेर, पुरुष कूं सुस्ती आवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, हाथ पग आवे खोड़ ।
और अलाया उरणी, काख बिलाया जोर ॥ २६५ ॥

रसी कान में चलत है, खून मूल बहे जाय ।
अदीठ चांदी पीठ में, पांव हाथ के मांय ॥
पांव हाथ के मांय, ईद और होवे खुजली ।
उठे अंग में भमल, देह सब होती मजली ॥
कहे सोनी हरिचंद, अन्न भी थोड़ा भाय ।
रसी कान में चलत है, खून मूल बहे जाय ॥ २६६ ॥

कोयली उठे कागला, और मदुरा रोग ।
खांसी और खून रोग से, मिले देही का भोग ॥
मिले देही का भोग, नाक से लोही पड़ता ।
कीड़ी नगरा होय, मानवी पावां चढ़ता ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में दौरा लोग ।
कोयली उठे कागला, और मदुरा रोग ॥ २६७ ॥

पांव चिणाया ऊनवा, जरे सरद सूं नाक ।
कोढ़ सफेदा उगड़े, गयो देह को वाक ॥
गयो देह को वाक, शीश में कीड़ा उठे ॥
और चुनीया होय, अंग की तेजी टूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, हचकियां मारे हाक ।
पांव चिणाया ऊनवा, जरे सरद सूं नाक ॥ २६८ ॥

कांगी होवे बाल कूं, गला रोग होय जाय ।
बालांमा और पूंछड़ी, दांत हाड़ कूं खाय ॥
दांत हाड़ कूं खाय, मांस में डाढ़ां फूटे ।
सुवा रोग से नार, कोईक वे पीछी उठे ॥
कहे सोनी हरिचंद, गंदगी ओदर माय ।
कांगी होवे बाल कूं, गला रोग हो जाय ॥ २६९ ॥

छाला होवे चेपीया, दुदेली और भाव ।
सीतांग उठे अंग में, और टूटीयो ताव ॥
और टूटीयो ताव, आदमी वाळा होवे ।
गुंबड़िया गभीर, आत्मा राक्षस खोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, राक्षी खेले दाव ।
छाला होवे चेपीया, दुदेली और भाव ॥ २७० ॥

सोजी आवे आँख में, मांस बदे सो जाण ।
पित्त अंग पर उबड़े, सब दादां की खाण ॥
सब दादां की खाण, लुवां से अग्नि उठे ।
इण परवाणे रोग, मुलक में मानव टूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में हरदम हाण ।
सोजी आवे आँख में, मांस बधे सो जाण ॥ २७१ ॥

आँख निरजला उतरे, के चक्कर के जाल ।
कोईक पड़दे गांठ है, कैई पड़ों में बाल ॥
कैई पड़ा में बाल, कोई के फूला होवे ।
कोईक जावे बैठ, जड़ा सूं राक्षस खोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, गिणे नहीं बूढ़ा बाल ।
आँख निरजला उतरे, के चक्कर के जाल ॥ २७२ ॥

कोरी आंखां दुखती, कोईक लालम लाल ।
केई जणां रे मोतिया, बुरा होत है हाल ॥
बुरा होत है हाल, मांजरा कोईक बाड़ा ।
कोईक राती बंध, कोईक वे देखे आड़ा ॥
कहे सोनी हरिचंद, वैद्य उतारे खाल ।
कोरी आंखां दुखती, कोईक लालम लाल ॥ २७३ ॥

छाला हो मर जावते, सो जहेरी जादू जाण ।
लक्ष्मण उपर चलायो, जैसे शक्ति बाण ॥
जैसे शक्ति बाण, इसी विद छाला उठे ।
फटकारे मर जाय, मुलक में मानव टूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, अकल सूं कीजे छाण ।
छाला हो मर जावते, सो जहेरी जादू जाण ॥ २७४ ॥

जादू के सब रोग है, सब जादू की बात ।
जादू से जुग तोड़िया, करी वाणिये घात ॥
करी वाणिये घात, करम सोई वाणे कीदा ।
और गुपती होम कराय, मुवा सो बीच में लीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, भूत बनियों के हाथ ।
जादू के सब रोग है, सब जादू की बात ॥ २७५ ॥

डाकण कीदी पाप से, खवी जंद और भूत ।
भोपो आवे घूमतो, दे शीश पर जूत ॥
दे शीश पर जूत, पलीती आगे मेले ।
पढ़े जाल का बोल, राक्षसी अंग में खेले ॥
कहे सोनी हरिचंद, फेर भी पावे मूत ।
डाकण कीदी पाप से, खवी जंद और भूत ॥ २७६ ॥

कोईक भोपा घुमता, कोई घुमाते सांप ।
कोईक बिच्छु मंतरे, केई तरां के जाप ॥
केई तरां के जाप, पूर्वज बातां केवे ।
पेली बांझ बणाय, लार सूं बेटा देवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, चलाया वाणे पाप ।
कोईक भोपा घुमता, कोई घुमाते सांप ॥ २७७ ॥

जिण विद धरणी ध्रुजती, इण विद ठंडो ताव ।
लख चौरासी उपरे, जीवा माथे घाव ॥
जीवा माथे घाव, दाव सोई वाणा खेले ।
गुपती जम बणाय, वाणिया खर्ची मेले ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की तोड़े नाव ।
जिण विद धरणी ध्रुजती, इण विद ठंडो ताव ॥ २७८ ॥

अपणी हड्डी टूटती, जिण विद फाटे पहाड़ ।
जुग माता रा जीव की, सूरा करसी वार ॥
सूरा करसी वार, कायर से कांई न होवे ।
वैरिया इस्क लिपटाय, पाप से पूंजी खोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पड़े जादू की मार ।
अपणी हड्डी टूटती, जिण विद फाटे पहाड़ ॥ २७९ ॥

मानव होता मरण कूं, बंद होत है नाक ।
चंदा सूरज रोग से, पड़ते काले राख ।
पड़ते काले राख, जीवड़ा होमे हाथी ।
गऊवां भैंस तुरंग, दुख वा धरणी पाती ॥
कहे सोनी हरिचंद, दुखी चौरासी लाख ।
मानव होता मरण कूं, बंद होत है नाक ॥ २८० ॥

घाव चोट नहीं लगत है, करम लगे सो जाण ।
जादू गुपती पाप का, लगे जमीं कूं बाण ॥
लगे जमीं कूं बाण, धरण की तेजी टूटी ।
कियो वाणिये जाल, जगत की सिद्धि उठी ॥
कहे सोनी हरिचंद, गई कंचन की खाण ।
घाव चोट नहीं लगत है, करम लगे सो जाण ॥ २८१ ॥

लोक धरण के आसरे, धरण आसरे राज ।
धरण आसरे दरखतां, सब धरणी में काज ॥
सब धरणी में काज, रतन चवदां की माया ।
धरणी के प्रताप, माणते जग में माया ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण को सब घट गाज ।
लोक धरण के आसरे, धरण आसरे राज ॥ २८२ ॥

रोग वाज उलाक है, दूजो हजम अवाज ।
आर पड़े जद काटके, बरसे गैरो गाज ॥
बरसे गैरो गाज, पृथ्वी पाणी पीवे ।
पाणी रे परसंग, जगत में आतम जीवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, समझलो आलमराज ।
रोग वाज उलाक है, दूजो हजम अवाज ॥ २८३ ॥

पृथ्वी कुळ को वृक्ष है, सरब कुळां की मांई ।
पांव धरण कूं पृथ्वी, सब कूं दीसे आई ॥
सब कूं दीसे आई, कोईक वे भीतर आंदा ।
समज्या चम्पा रुंख, और वे कोली कांदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये दीधी दाई ।
पृथ्वी कुळ को वृक्ष है, सरब कुळां की मांई ॥ २८४ ॥

अग्नि पेलो रतन है, दूजा जल कूं जाण ।
तीजी पृथ्वी जाणिये, चौथी तरवर खाण ॥
चौथी तरवर खाण, पांचमी गऊ माता ।
छठी भैंस मवेश, सातमा अन्नजी दाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, आठमा हस्ती वाण ।
अग्नि पेलो रतन है, दूजा जल कूं जाण ॥ २८५ ॥

नवमी घोड़ी जाणिये, दशमी अज्या मांई ।
एकादश में रासबी, और ऊंट सुखदाई ॥
और ऊंट सुखदाई, तेरमी घेटी केवे ।
चवदा मांय कपास, जगत कूं वस्त्र देवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो चवदे रतन सवाई ।
नवमी घोड़ी जाणिये, दशमी अज्या मांई ॥ २८६ ॥

तीन रतन पौरात है, कुत्ता कुक्कड मोर ।
कुक्कड़ हेला देवते, कुत्ता पकड़े चोर ॥
कुत्ता पकड़े चोर, मोर मुल्कां की केवे ।
हिरदा हुआ कठोर, खबर मानव नहीं लेवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, ठेठ से रखते दोर ।
तीन रतन पौरात है, कुत्ता कुक्कड़ मोर ॥ २८७ ॥

सौ वर्ष की सीकीयां, वाणे दी बणाय ।
जण परवाणे टीपणा, ब्राह्मण मांगे खाय ॥
ब्राह्मण मांगे खाय, करम सीकी परवाणे ।
गुपत कराते पाप, भेद कोई विरला जाणे ॥
कहे सोनी हरिचंद, राज प्रजा भरमाय ।
सौ वर्ष की सीकीयां, वाणे दी बणाय ॥ २८८ ॥

संस्कृत श्लोक कूं, चोर शास्त्र जाण ।
पढ़ता सो नर जाणता, कपट नहीं निरवाण ॥
कपट नहीं निरवाण, भेद भाषा में बोले ।
कपट करीजे दूर, भेद अंतर का खोलो ।
कहे सोनी हरिचंद, कपट के मारो बाण ।
संस्कृत श्लोक कूं, चोर शास्त्र जाण ॥ २८९ ॥

कथा चली पैलातरी, निरो कपट और झूठ ।
वेद चलाए राक्षसी, पड़ी धरम में फूट ॥
पड़ी धरम में फूट, वेम सूं मानव भरीया ।
रीया जाल लिपटाय, भूल गया आदु किरिया ॥
कहे सोनी हरिचंद, नेकियां पड़ी पला से छूट ।
कथा चली पैलातरी, निरो कपट और झूठ ॥ २९० ॥

गुपत पाप की नकल कूं, गरुड़ पुराण में जाण ।
नासकेत की पोथियां, उण में भी कुछ बाण ॥
उण में भी कुछ बाण, बुझ पंडित कूं मैना ।
कुण खंड में पाप, नकल राजा कूं कहना ॥
कहे सोनी हरिचंद, वो ही जादू की खाण ।
गुपत पाप की नकल कूं, गरुड़ पुराण में जाण ॥ २९१ ॥

नर नारी कूं मारते, पूर जगत के मांय ।
वो जादू के जोर से, मसाण सूं ले जाय ॥
मसाण सूं ले जाय, दूसरा मुड़दा धरते ।
लोक देखते नहीं, आँख पर जादू करते ।
कहे सोनी हरिचंद, जीवता चौरासी पर थाय ।
नर नारी कूं मारते, पूर जगत के मांय ॥ २९२ ॥

जादू बंद कराय के, करो चोर कूं बंद ।
जाली हराम छोड़ के, एक धरम कूं बंद ॥
एक धरम कूं बंद, मसकरी ठठा मेलो ।
शस्त्र धारण करो, रीत राजा की झेलो ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाज सो सूरा चन्द ।
जादू बंद कराय के, करो चोर कूं बंद ॥ २९३ ॥

सदा राक्षसी वाणियां, सदा पाप की खाण ।
केई मराया राजवी, केईक मुगल पठाण ॥
केईक मुगल पठाण, दोवड़ी बातां केता ।
अपणा काम बणाय, और के फांसी देता ॥
कहे सोनी हरिचंद, मारते जादू बाण ।
सदा राक्षसी वाणियां, सदा पाप की खाण ॥ २९४ ॥

अगन लगे और मुलक में, पड़ोसी घर आय ।
इण परवाणे वाणियां, थोड़े-थोड़े खाय ॥
थोड़े-थोड़े खाय, हाथ में जादू यांके ।
डरते नहीं लगार, जगत पर जाली नाखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, राज बनिया सूं जाय ।
अगन लगे और मुलक में पड़ोसी घर आय ॥ २९५ ॥

लक्ष्मी जग में ज्योत है, विद्या ज्योत उजास ।
हीरा माणक जगत में, देखण के प्रकाश ॥
देखण के प्रकाश, भाण और चंदा ज्योति ।
तिर्गुण माया देख, तार में पोले मोती ॥
कहे सोनी हरिचंद, मांडके हरदम वांच ।
लक्ष्मी जग में ज्योत है, विद्या ज्योत उजास ॥ २९६ ॥

नारी कुळ को वृक्ष है, जड़ चेतन क्या जीव ।
पांच तंत गुण तीन में, बोले आदु पीव ॥
बोले आदु पीव, आद है धरणी माता ।
आद धणी है ओही, उपजे मांय समाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण मां आदु पीव ।
नारी कुळ को वृक्ष है, जड़ चेतन क्या जीव ॥ २९७ ॥

सदा धरम की हाकमी, बावन राजा पाय ।
वो ही कुराण में धरम था, खान बोयतरो मांय ॥
खान बोयतरो मांय, फूट तो बनिये घाली ।
गया धरम कूं भूल, पाप की डोरी झाली ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप तो बनिया लाय ।
सदा धरम की हाकमी, बावन राजा पाय ॥ २९८ ॥

काजी भूले कुराण कूं, ब्राह्मण भूला वेद ।
राजा भूला राज कूं, दिया घरों का भेद ॥
दिया घरों का भेद, जोग में जोगी भूला ।
घर की पूंजी खोय, और का देखे चूला ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप से पेठी खेद ।
काजी भूले कुराण कूं, ब्राह्मण भूला वेद ॥ २९९ ॥

मोयणी फेरे नार पे, धणी सुजता नांही ।
यूं जगत पर जाल है, भूला आदु सांई ॥
भूला आदु सांई, करम सोई वाणे कीदा ॥
हिन्दू मुसलमान, जाल में दोनू लीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, होम चौरासी मांही ।
मोयणी फेरे नार पे, धणी सुजता नांही ॥ ३०० ॥

कदी कलेजा होमते, कदी होमते शीश ।
कदी पांच पच्चीस है, कदी एक सौ बीस ॥
कदी एक सौ बीस, कदी सैसर की भरती ।
कदी होमते लाख, जगत में मरीयां पड़ती ॥
कहे सोनी हरिचंद, रगत का करते कीच ।
कदी कलेजा होमते, कदी होमते शीश ॥ ३०१ ॥

धरण नाम का होमते, पूर चौरासी लाख ।
आधा झटके उड़ता, आधा अग्नि खाख ॥
आधा अग्नि खाख, जीवड़ा होमे नागा ।
अज्या गऊ तुरंग, पंछीया कुत्ता कागा ॥
कहे सोनी हरिचंद, किसी का होमे नाक ।
धरण नाम का होमते, पूर चौरासी लाख ॥ ३०२ ॥

इण परवाणे वाणिये, वशी करी है मौत ।
चौरासी पर होमते, तोड़ जीव का आंत ॥
तोड़ जीव का आंत, जणे सूं पलीत जागे ।
भूत सूं वशी में होय, चालता अपने आगे ॥
कहे सोनी हरिचंद, किसी का तोड़े दांत ।
इण परवाणे वाणिये, वशी करी है मौत ॥ ३०३ ॥

चंद्र भाण दोय उगते, ज्यां जमीं का फूल ।
नाभ कमल स्थान है, शीश ज्योत का मूल ॥
शीश ज्योत का मूल, ज्यां की खबरां काड़ो ।
गुपत होत है होम, जगत में हरदम खाड़ो ॥
कहे सोनी हरिचंद, ब्रह्म की काड़ो भूल ॥
चंद्र भाण दोय उगते, ज्यां जमीं का फूल ॥ ३०४ ॥

मूल नाभ के रोग से, दुखी मानवी पूर ।
शीश इंदरी रोग से, घटे पुरुष का नूर ॥
घटे पुरुष का नूर, आत्मा काची भागे ।
गुपत होत है होम, रोग धरणी कूं लागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, होम वे दरीयावां से दूर ।
मूल नाभ के रोग से, दुखी मानवी पूर ॥ ३०५ ॥

बिना पाप कण फैंकते, नहीं टूटता तार ।
वो ही साधना होम कर, लेते बकरा मार ॥
लेते बकरा मार, अड़द वो चाले सागे ।
लगे पाप को करम, बड़ाके काया भागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप जादू की मार ।
बिना पाप कण फैंकते, नहीं टूटता तार ॥ ३०६ ॥

जंत्र कोटा मांड के, करे उसी कूं धूप ।
गुपत जीव कूं होमते, वशी होत है भूप ॥
वशी होत है भूप, जगत में जाल चलावे ।
तंतर लिखे देखाय, मानवी यूं भरमावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, केईक दिखाते रुप ।
जंत्र कोटा मांड के, करे उसी कूं धूप ॥ ३०७ ॥

वाणा बात उड़ाय के, लखे बात का वेद ।
वोई वेद कूं जाहेर कर, करे जीव कूं खेद ॥
करे जीव कूं खेद, पाप से परचा दिखे ।
यूं जगत भरमाय, मानवी सारा सीखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख बनियों का भेद ।
वाणा बात उड़ाय के, लखे बात का वेद ॥ ३०८ ॥

समझो दोनुं दीनजी, जुग में हुआ जुलम ।
अमली होको हाथ में, मुंह पर चढ़े चिलम ॥
मुंह पर चढ़े चिलम, आपको इण विद लागे ।
परी बिगड़सी रैयत, जमा बिन फिरसो भागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, समझलो करते क्यूं विलम ।
समझो दोनुं दीनजी, जुग में हुआ जुलम ॥ ३०९ ॥

सिरदारां कूं बुज के, वेगा करो विचार ।
मोड़ो होवे आकरो, बिगड़े जाई कंसार ॥
बिगड़े जाई कंसार, खावतां लागी खारो ।
घर की पूंजी खोय, जगत कूं कैसे तारो ॥
कहे सोनी हरिचंद, लार सूं वाणा देही पछाड़ ।
सिरदारां कूं बुज के, बेगा करो विचार ॥ ३१० ॥

वाणा फल कूं होमते, चुड़ी और नारेल ।
सीताफल और दाड़मा, खड़ी कराते केळ ॥
खड़ी कराते केळ, होम जीवां के माथे ।
ए दुश्मण करते होम, सोई अपणे कूं खाते ॥
कहे सोनी हरिचंद, बात का देखो मेळ ।
वाणा फल कूं होमते, चुड़ी और नारेल ॥ ३११ ॥

इण परवाणे होम से, आमी सामी मौत ।
पथरी कमलो पिलियो, पड़े रोग सूं दांत ॥
पड़े रोग सूं दांत, कोई होवे ना सुरा ।
कोई मरम का रोग, उठके होते पूरा ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख जादू की मौत ।
इण परवाणे होम से, आमी सामी मौत ॥ ३१२ ॥

रोग मांडिया वेद में, एक सौ ने तैसीस ।
होट पांव कर फाटते, ए पूरा चौतीस ।।
ए पूरा चौतीस, जगत में मानव जाणे ।
गुपत हजारां रोग, दवाईया वेदी आणे ।।
कहे सोनी हरिचंद, रोग री करां बात वे तीस ।
रोग मांडिया वेद में, एक सौ ने तैतीस ।। ३१३ ।।

सरब होम का मूल है, लख चौरासी मांय ।
वो ही होम कूं बंद करे, तो ये चालते नांय ।।
तो ये चालते नांय, शीश धरणी पे पटको ।
चाहे करलो ध्यान, चाहे वे ऊंदा लटको ।।
कहे सोनी हरिचंद, फेर तो संपत सांय ।
सरब होम का मूल है, लख चौरासी मांय ।। ३१४ ।।

आहार छोड़ियो पृथ्वी, बळी पेट में भूख ।
नीपत थाकी गर्भ में, जदी उठगी हूक ।।
जदी उठगी हूक, आहार बिन कैसे जीवे ।
जीवां के दो आहार, पृथ्वी पाणी पीवे ।।
कहे सोनी हरिचंद, चराचर लागो दुख ।
आहार छोड़ियो पृथ्वी, बळी पेट में भूख ।। ३१५ ।।

कुंजर घोड़ा रोग री, किन कूं केता बात ।
काछब रुपी पृथ्वी, दुख से जल नहीं पात ।।
दुख से जल नहीं पात, वार्ता मानव केवे ।
और जीव के रोग, अंग में आंटा देवे ।।
कहे सोनी हरिचंद, दवा मानव के हाथ ।
कुंजर घोड़ा रोग री, किन कूं केता बात ।। ३१६ ।।

जैसे जल में काछबो, इस विद पृथ्वी जाण ।
काछब कच्चा जीवड़ा, पृथ्वी वजर वखाण ॥
पृथ्वी वजर वखाण, निरंजन धरती माता ।
आरब उतपति देख, उपजे मांय समाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, सरब सिद्धि की खाण ।
जैसे जल में काछबो, इस विद पृथ्वी जाण ॥ ३१७ ॥

दोखा करते धरण कूं, पवना वाजे पूर ।
वो वादी के जोर से, घटे जगत को नूर ॥
घटे जगत को नूर, डकारां भूंडी वासे ।
और वादी करती जोर, निकले पवना पिछे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप से उड़े धूड़ ।
दोखा करते धरण कूं, पवना वाजे पूर ॥ ३१८ ॥

लाख चौरासी होम तो, जादू गुपती जाण ।
प्रगट जादू आणिया, सवा लाख परवाण ॥
सवा लाख परवाण, मंतरां झूठा साजे ।
पूर चौरासी लाख, होम सूं पृथ्वी दाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप के मारे बाण ।
लाख चौरासी होम तो, जादू गुपती जाण ॥ ३१९ ॥

हट पकड़ियो वाणिये, वो ही राक्षसी सूल ।
रजवाड़ो कूं गालणो, मरणो चाहे कबूल ॥
मरणो चाहे कबूल, इस विद भेला मरते ।
वो चौरासी हट, मरे दूरी नहीं धरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय की पड़गी भूल ।
हट पकड़ियो वाणिये, वो ही राक्षसी सूल ॥ ३२० ॥

सर्प डसे संसार कूं, बचा करे नहीं बाल ।
यूं डसे है वाणिया, वे लड़का मांही काळ ॥
वे लड़का मांही काळ, सर्पणीं सागे मारो ।
और करो जेर को नाश, धरम सूं मानव तारो ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की बांधो पाळ ।
सर्प डसे संसार कूं, बचा करे नहीं बाल ॥ ३२१ ॥

गेहूँ बोवते खेत में, नेदण काड़ो दूर ।
सो नेदण नहीं तोड़ते, तो गेहूँ होत है धूड़ ॥
गेहूँ होत है धूड़, वाणिया नेदण जाणो ।
और तोड़ फैक दो दूर, न्याय पाणी ज्यूं छाणो ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में आसी नूर ।
गेहूँ बोवते खेत में, नेदण काड़ो दूर ॥ ३२२ ॥

काट चढ़े तलवार कूं, खोज काट सूं जाय ।
काट चढ़े बरसात का, वाणा हरदम खाय ॥
वाणा हरदम खाय, पापीया लारे लागा ।
करे जगत पर जाल, मानवी फिरते भागा ॥
कहे सोनी हरिचंद, अन्न हाथे नहीं आय ।
काट चढ़े तलवार कूं, खोज काट सूं जाय ॥ ३२३ ॥

रावण ले गयो सीतवा, लंक सोवनी भीत ।
सलाह बताई वाणिये, नव रोजां की रीत ।
नव रोजां की रीत, जठा सूं चाली आवे ।
कियो वाणिये करम, दुख वे राजा पावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, बिगाड़ी बनिये नीत ।
रावण ले गयो सीतवा, लंक सोवनी भीत ॥ ३२४ ॥

पर तिरीयां मां जाणते, पुरुष ज्ञान गुलतान ।
हुवा मसुदी वाणिया, जद डूबा सुलतान ॥
जद डूबा सुलतान, और की तिरीयां लाई ।
बनिया की बुध ले, घरा सूं दिल्ली गमाई ।
कहे सोनी हरिचंद, भेजीया वे पाणी मुलतान ।
पर तिरीयां मां जाणते, पुरुष ज्ञान गुलतान ॥ ३२५ ॥

वो ही वगत का महा दुखी, हता जनाना पूर ।
साथे लेकर दौड़ता, करी मुलक री धूड़ ॥
करी मूलक री धूड़, पासता बनिये लायो ।
बनिये की सीखाई, दिल्ली को राज गमायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, फौज की झुरमझूर ।
वो ही वगत का महा दुखी, हता जनाना पूर ॥ ३२६ ॥

सदा मुलक में आप धणी, नहीं किसी का जोर ।
वाणा आया लंक से, दियो जगत कूं तोड़ ॥
दियो जगत कूं तोड़, आये सौदागर बनके ।
लक्ष्मी लेगा लूट, ठीकरा ठाली रणके ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत का वाणा चोर ।
सदा मुलक में आप धणी, नहीं किसी का जोर ॥ ३२७ ॥

मिट्टी खुराक राक्षसी, देवत खुराक नांही ।
देव सरुपी आप हो, देखत भूला कांई ॥
देखत भूला कांई, देवता रुपक थांको ।
पाप छोड़ दो दूर, भलो वे सब जीवां को ॥
कहे सोनी हरिचंद, चराचर बोले सांई ।
मिट्टी खुराक राक्षसी, देवत खुराक नांही ॥ ३२८ ॥

करम लगो मां धरण कूं, गयो मिनख ईमान ।
हिन्दू भूले पाप से, भूले मुसलमान ।।
भूले मूसलमान, पाप सूं कीदा फेटा ।
गया धरम कूं भूल, वाणिये दीधा लेटा ।।
कहे सोनी हरिचंद, दया और खूटा दान ।
करम लगो मां धरण कूं, गयो मिनख ईमान ।। ३२९ ।।

बावन राजा महाबली, वोइज बावन वीर ।
पाप जाल कर खेंचियो, चौरासी की तीर ।।
चौरासी की तीर, जोगणी चौसठ कीदी ।
वे राजों की नार, जाल सूं भेली लीदी ।।
कहे सोनी हरिचंद, समझलो अकल वंत गंभीर ।
बावन राजा महाबली, वोइज बावन वीर ।। ३३० ।।

वरस हजारां वरतीया, चले बड़ों पर पाप ।
लाख टेलवी बामणी, ज्यांका चाले जाप ।।
ज्यांका चाले जाप, राज की सेवा करती ।
चौसठ सतीयां पास, लाय के भोजन धरती ।।
कहे सोनी हरिचंद, ब्रह्म में देखो आप ।
वरस हजारां वरतीया, चले बड़ों पर पाप ।। ३३१ ।।

क्या देवी क्या देवता, क्या गणपत भगवान ।
क्या ब्रह्मा क्या महेश रंग, क्या पीर पकाबर खान ।।
क्या पीर पकाबर खान, राश बारां में लीदा ।
गुपत होम कराय, पाप सूं पलीत कीदा ।।
कहे सोनी हरिचंद, जगत सब सुणियो कान ।
क्या देवी क्या देवता, क्या गणपत भगवान ।। ३३२ ।।

शुक्र सोम गुरु देवता, शनि मंगल आदीत ।
ए ही राम के संत थे, पूरी थी परतीत ॥
पूरी थी परतीत, बुध की वाणा जात ।
राहू केतु बिन शीश, राक्षस मानव खात ॥
कहे सोनी हरिचंद, देव तो छे ही वार वरतीत ।
शुक्र सोम गुरु देवता, शनि मंगल आदीत ॥ ३३३ ॥

लख चौरासी उपरे, किया ग्रहो कूं बंद ।
जीव होमाते वाणिया, करी जगत में गंध ॥
करी जगत में गंध, देवता राक्षस कीदा ।
न्यारा भेख बणाय, जगत के पीछे दीधा ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख बनियों के फंद ।
लख चौरासी उपरे, किया ग्रहो कूं बंद ॥ ३३४ ॥

जाल कियो तो जोग पर, किया मंछदर कैद ।
बनिये जादू सुपिया, ज्यां होमिया गेंद ॥
ज्यां होमिया गेंद, खबर गोरख कूं लागी ।
हुओ धरण में रोग, पाप सूं मक्खी जागी ॥
कहे सोनी हरिचंद, रोग री पड़ी ठेठ से एद ।
जाल कियो तो जोग पर, किया मछंदर कैद ॥ ३३५ ॥

गोरख हता महाजती, सदा धरम को नूर ।
दोखो उठियो धरण कूं, हुई माखियां पूर ॥
हुई माखियां पूर, जीवड़ा काचा मरते ।
कियो वाणिये रोग, नाम गोरख का धरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, समझलो आलम सूर ।
गोरख हता महाजती, सदा धरम को नूर ॥ ३३६ ॥

वो ही वगत का चालिया, पूर जगत में जाल ।
कोईक भैरु साधते, कोईक साजे काल ॥
कोईक साजे काल, देवियां गणपत साजे ।
परचा देवे बताय, अखाड़े बैठा गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, मुवा पर करते हाल ।
वो ही वगत का चालिया, पूर जगत में जाल ॥ ३३७ ॥

करम कमायो वाणिये, जतियां कूं सिखाई ।
ज्यां पे जोगी सिखीया, पड़े कुआ के मांय ॥
पड़े कुआ के मांय, बाहर अब कैसे आवे ।
गया आद कूं भूल, कुए में रांजा गावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में सुणियो भाई ।
करम कमायो वाणिये जतियां कूं सिखाई ॥ ३३८ ॥

पर तिरिया कूं हेरता, सोई थूल के मोल ।
क्या राजा क्या मानवी, एक बराबर तोल ॥
एक बराबर तोल, पीठ परणी कूं देता ।
और नार संग मोल, पुरुष की दमड़ी जेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, ब्रह्म का ताला खोल ।
पर तिरिया कूं हेरता, सोई थूल के मोल ॥ ३३९ ॥

परणी वाजे हंसली, और थूल ज्यूं होय ।
परणी खांमद एक है, थूल सात नव दोय ॥
थूल सात नव दोय, जगत में नागी वाजे ।
कुळ कूं दाग लगाय, बजारां बैठी गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पुरुष की ईज्जत खोय ।
परणी वाजे हंसली, और थूल ज्यूं होय ॥ ३४० ॥

दोय दीन पर नार कूं, जाण धरम की बहन ।
एक-एक घर जावणा, बोल धरम का वेण ॥
बोल धरम का वेण, पेल से धरम विचारो ।
दोय दीन पर जाल, वाणिये कियो पसारो ॥
कहे सोनी हरिचंद, पकड़ लो सदा धरम की श्यान ।
दोय दीन पर नार कूं, जाण धरम की बहन ॥ ३४१ ॥

तिरिया खामद पूजती, नर परणी की सेव ।
जदी अंग पर नूर था, जदी वाजता देव ॥
जदी वाजता देव, अबे विक्रम में आगा ।
और नार के संग, पलीती खाने लागा ॥
कहे सोनी हरिचंद, नाम नेकी सूं लेव ।
तिरिया खामद पूजती, नर परणी की सेव ॥ ३४२ ॥

दोय स्त्री पुरुष के, ज्यां घरों में वेर ।
के तो जादू मारती, के तो देती जेर ॥
के तो देती जेर, एक दूजी कूं मारे ।
कर दूजी पर जाल, पुरुष कूं वे नहीं धारे ॥
कहे सोनी हरिचंद, होण नहीं देती खेर ।
दोय स्त्री पुरुष के, ज्यां घरों में वेर ॥ ३४३ ॥

सो स्त्री दोय है, रखो दोय से प्रीत ।
मान कुमान कूं जाणते, सो तो आंधा भीत ॥
सो तो आंधा भीत, धूड़ हाथां से खादी ।
हेर दूसरी नार, अकल चोदू की लादी ॥
कहे सोनी हरिचंद, सत की रखणा नीत ।
सो स्त्री दोय है, रखो दोय से प्रीत ॥ ३४४ ॥

प्रगट विक्रम पाप है, गुपती है महापाप ।
गुपती राक्षस वाणिये, दियो जमीं कूं ताप ॥
दियो जमीं कूं ताप, खूटगी नीपत शाखां ।
बिना खुराक रोग, उठके मरते लाखां ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्ञान कर देखो आप ।
प्रगट विक्रम पाप है, गुपती है महापाप ॥ ३४५ ॥

हराम विक्रम खोलते, जद वाजे निकलंग ।
पृथ्वी टूटी पाप से, सर्व जीव दुकलंग ॥
सर्व जीव दुकलंग, कलंकी दूरा टालो ।
सूरा शामिल होय, करो वाणा को काळो ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में सब चेतो सुकलंग ।
हराम विक्रम खोलते, जद वाजे निकलंग ॥ ३४६ ॥

परणी घर की स्त्री, वो कलंकी नांही ।
अनेक मानव जानकर, साख दीधी इण मांही ॥
साख दीधी इण मांही, कलंक तो पर तिरिया को ।
और जीव पर घात, जगत में डूबत लाखों ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम सूं नेड़ा सांई ।
परणी घर की स्त्री, वो कलंकी नांही ॥ ३४७ ॥

और पुरुष को हेरती, सोई कलंकी नार ।
सतीयां भोजन जीमती, विष के मुडे गार ॥
विष के मुडे गार, द्वार सूं राखो दूरी ।
और करे धरम की सेव, स्त्री वे नर पूरी ॥
कहे सोनी हरिचंद, घरो घर खाती मार ।
और पुरुष को हेरती, सोई कलंकी नार ॥ ३४८ ॥

नीच नजर कूं छोड़ के, ऊंच नजर सूं देख ।
हराम खोलो आपका, क्या सैयद क्या शेख ।
क्या सैयद क्या शेख, हिंदवा मुगल पठाणा ।
हराम करता पुरुष, जगत में नहीं खटाणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम सूं लिखना लेख ।
नीच नजर कूं छोड़ के, ऊंच नजर सूं देख ॥ ३४९ ॥

आद धरम सूं चालते, ये पुरुष का काम ।
आद न्याय प्रमाण से, अमर पुरुष का नाम ॥
अमर पुरुष का नाम, आद गुण हरदम गाया ।
किया पाप कूं दूर, अमर पद सोई नर पाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, स्वास में रमते राम ।
आद धरम सूं चालते, ये पुरुष का काम ॥ ३५० ॥

सभी मसाले साग में, नहीं साग में लूंण ।
महिमा करके रांधते, फीका खावे कूंण ॥
फीका खावे कूंण, जीभ सूं बोले बोळा ।
नहीं लूंण बिन भेद, जगत में पैठा रोळा ॥
कहे सोनी हरिचंद, घरों का देखो गुण ।
सभी मसाले साग में, नहीं साग में लूण ॥ ३५१ ॥

सिरदारां कूं जाणजो, जैसे मोती कान ।
चाकर वजीर जाणिये, सूखे दरखत पान ॥
सूखे दरखत पान, उड़के दूरा जावे ।
क्षत्री हीरा खाण, मोल वे मूंगा पावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां सूं रहेसी आन ।
सिरदारां कूं जाणजो, जैसे मोती कान ॥ ३५२ ॥

चाकर झाडु देण कूं, के घोड़ा कूं घास ।
महासुरे रजपुत कूं, रखो आपके पास ।।
रखो आपके पास, राज की बाहें दूजी ।
वाणा दो निकाल, राज की लेवे पूंजी ।।
कहे सोनी हरिचंद, कहत हूं स्वासो स्वास ।
चाकर झाडू देण कूं, के घोड़ा कूं घास ।। ३५३ ।।

सिरोही नगर में जनमीया, माता रुपा नाम ।
पिता तो सोनी रामजी, छोरु हरिचंद नाम ।।
छोरु हरिचंद नाम, मिलिया मोय अनोपस्वामी ।
और उम्मेदसिंह महाराव, सतीनर महाघण नामी ।।
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां अरबदगढ़ के धाम ।
सिरोही नगर में जनमीया, माता रुपा नाम ।। ३५४ ।।

दादा सोनी किसनजी, काला ज्यांका वंश ।
पिता तो सोनी रामजी, हरिचंद ज्यांको अंश ।।
हरिचंद ज्यांको अंश, दूध रुपा का धाया ।
गुरु मिले अविनाश, प्रेम का प्याला पाया ।।
कहे सोनी हरिचंद, जगत के सुणियो पंच ।
दादा सोनी किसनजी, काला ज्यांका वंश ।। ३५५ ।।

बहेन कुशाला केसरा, चम्पा कंकू चार ।
बंधव चुन्नीलाल थे, हरिचंद भक्तिदार ।।
हरिचंद भक्तिदार, दादीया राधा रुकमा ।
माता रुपा नाम, सभी जन रेते सुख मां ।।
कहे सोनी हरिचंद, पिता रामजी उतरे पार ।
बहेन कुशाला केसरा, चम्पा कंकू चार ।। ३५६ ।।

सम्वत उगणीस मास हतो, मिगसर सुद की बीज ।
वर्ष हतो खुद बावनो, जदी लिखाई धीज ॥
जदी लिखाई धीज, सूरमा शस्त्र झेलो ।
और करो जगत रो न्याय, खड़ग ले दल में खेलो ।
कहे सोनी हरिचंद, देखलो सदा न्याय की बीज ।
सम्वत उगणीस मास हतो, मिगसर सुद की बीज ॥ ३५७ ॥

मंतर सीकी टीपणा, चौरासी का वेद ।
वहाँ बनावट होत है, ऐ बनियों का भेद ॥
ऐ बनियो का भेद, बनावट वहां पर होती ।
जतियां कूं सिखाय, वाणिये दीदी पोथी ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में पूरी खेद ।
मंतर सीकी टीपणा, चौरासी का वेद ॥ ३५८ ॥

पांच रंग का टीपणा, तीन गुणों का वेद ।
पाप होम वे आठ पे, जद पृथ्वी कूं खेद ॥
जद पृथ्वी कूं खेद, लिखाते श्याम सफेदा ।
पीला हरीया लाल, बामणां घर-घर कहेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, जाल सूं भूला भेद ।
पांच रंग का टीपणा, तीन गुणों का वेद ॥ ३५९ ॥

सफेद मूंगी बोलती, जद पाणी पर भार ।
गऊ नांदिया महादुखी, करो राज नीर धार ॥
करो राज नीर धार, कपासी चावल खूटे ।
और सफेदा हाड़, मानवी चांदी टूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप से फाटे पहाड़ ।
सफेद मूंगी बोलती, जद पाणी पर भार ॥ ३६० ॥

पीली मूंगी बोलती, जद पृथ्वी कूं रोग ।
केसर हल्दी सोवरण, और दुखी सब लोग ॥
और दुखी सब लोग, पील की गऊवां घोड़ी ।
और कैवड़ा आंब, हजारों वस्तु तोड़ी ॥
कहे सोनी हरिचंद, मकाया मिलती भोग ।
पिली मूंगी बोलती, जद पृथ्वी कूं रोग ॥ ३६१ ॥

हरी वाजबी बोलती, सर्व दुखी वन राय ।
प्राण इसी के आसरे, पत्थर धूड़ नहीं खाय ॥
पत्थर धूड़ नहीं खाय, जगत में वादी जागे ।
और नसों में रोग, मूंग री नीपत भागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव सब देते हाय ।
हरी वाजबी बोलती, सर्व दुखी वन राय ॥ ३६२ ॥

रोग लाल पर होत है, पतंग कसुंबा गोल ।
खून प्राण का सूखता, गेऊं चिने नहीं बोल ॥
गेऊं चिने नहीं बोल, भाण में तेजी आवे ।
और ऊँट कूं रोग, खाण तांबा की जावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख बनियों का छोल ।
रोग लाल पर होत है, पतंग कसुंबा गोल ॥ ३६३ ॥

अज्या भैंसा कुंजरा, श्याम वस्तु पर जाल ।
लोह अड़द और अमल पर, फेर तिलां पर काल ॥
फेर तिलां पर काल, शीश में दोखो ऊठे ।
सीसा उपर जाल, गगन में तारा टूटे ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुणो भाई बूढ़ा बाल ।
अज्या भैंसा कुंजरा, श्याम वस्तु पर जाल ॥ ३६४ ॥

सर्व रंग पर होम वे, ज्यां की बारह राश ।
जीव होमाते वाणिया, हरदम बारह मास ॥
हरदम बारह मास, जगत की सिद्धि उठी ।
कियो वाणिये जाल, पाप से बुद्धि खूटी ॥
कहे सोनी हरिचंद, चोर है बनिया खास ।
सर्व रंग पर होम वे, ज्यांकी बारह राश ॥ ३६५ ॥

तमो गुण के होम से, चले काल भरपूर ।
रजो गुण के होम से, घटे जगत का नूर ॥
घटे जगत का नूर, पाप सतो गुण माथे ।
ठंडा रोग चलाय, प्राण का खून सुखाते ॥
कहे सोनी हरिचंद, होम वे दरियावो से दूर ।
तमो गुण के होम से, चले काल भरपूर ॥ ३६६ ॥

अगन रुप तमो गुणी, रजो गुण में वाय ।
जल रुपी सतो गुणी, तीन एक रे मांय ॥
तीन एक रे मांय, ज्यां से बीज घड़ाणा ।
सर्व बीज का मूल, सदा है आद पुराणा ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां पर होम चलाय ।
अगन रुप तमो गुणी, रजो गुण में वाय ॥ ३६७ ॥

तमो गुण में कान है, रजो गुण मुख जाण ।
सतो गुण में नेतरां, तांको करु वखाण ॥
तांको करु वखाण, कान में काळ समाया ।
नीर नेतरा मांय, मुख में वाय मिलाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, देख लो तीनों का परवाण ।
तमो गुण में कान है, रजो गुण मुख जाण ॥ ३६८ ॥

बांध लिया गुण तीन में, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
पाप होम से दिखता, तीन देव का भेष ॥
तीन देव का भेष, साधना पूरी करते ।
जादू के प्रताप, रुप तीनों का धरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, लगायो बनिये लेश ।
बांध लिया गुण तीन में, ब्रह्मा विष्णु महेश ॥ ३६९ ॥

तमो गुण, गुण एक है, रजो गुण से दो ।
सतो गुण में तीन है, सदा आद में जो ॥
सदा आद में जो, अगन और पवना पाणी ।
ओई तीन को रुप, आद से सृष्टि रचांणी ॥
कहे सोनी हरिचंद, आद से रखणा मोह ।
तमो गुण, गुण एक है, रजो गुण से दो ॥ ३७० ॥

मरी पड़े तमो गुणी, रजो गुण में ताव ।
सतो गुण में कोड़ है, गुपत मारते घाव ॥
गुपत मारते घाव, पाप दरियावों आगे ।
चले रोग री लपट, बड़ा के काया भागे ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय से सुरती लाव ।
मरी पड़े तमो गुणी, रजो गुण में ताव ॥ ३७१ ॥

वीर बणाया राज कूं, भूत किया सिरदार ।
जती सती कर डंकणी, उपर बकरा मार ॥
उपर बकरा मार, मंदिरां भोपा बैठा ।
हरदम जीव कटाय, पाप सूं पलीत पैठा ॥
कहे सोनी हरिचंद, खावते रगत मांस मुरदार ।
वीर बणाया राज कूं, भूत किया सिरदार ॥ ३७२ ॥

इण परवाणे देवता, पड़े नरक के मांय ।
राक्षस मारीया दिखसी, सभी स्वर्ग के मांय ॥
सभी स्वर्ग के मांय, ढील वा कैसे झाली ।
पड़ा नरक के मांय, किस विद ओढ़ी राली ॥
कहे सोनी हरिचंद, राज होता रण तांई ।
इण परवाणे देवता, पड़े नरक के मांय ॥ ३७३ ॥

सुर तैतीसा नाम का, गुपत कराते पाप ।
भूत बैठाया मंदिरों, चौरासी पर जाप ॥
चौरासी पर जाप, जठा सूं, परचा चलता ।
कोई उतारे कोढ़, किसी की आँखों खुलता ॥
कहे सोनी हरिचंद, ख्याल कर देखो आप ।
सुर तैतीसा नाम का, गुपत कराते पाप ॥ ३७४ ॥

गायां सूं नहीं उगरे, काम किया सूं पार ।
भजन गावते भूल गये, आई जगत में हार ॥
आई जगत में हार, भेद वे कोई न पाया ।
छाती कूटा करे, धरम का मूल गमाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्ञान की वैगी गार ।
गायां सूं नहीं उगरे, काम किया सूं पार ॥ ३७५ ॥

पंखेरु बंड़ जीवड़ा, ये इंड की खाण ।
जनम्या पीछे नीपजे, नहीं शीश पर कान ॥
नहीं शीश पर कान, थान बिन बच्चा जीवे ।
और देख कुदरती खेल, तीन गुण चोला सीवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, दूध बिन आती श्यान ।
पंखेरु बंड़ जीवड़ा, ये इंड की खाण ॥ ३७६ ॥

मानव गऊंवा भैंस कुंजरा, अज्या ऊंट वखाण ।
रासब घेटी शेर घोड़िया, ये सब जर की खाण ॥
ये सब जर की खाण, बांदरा रीछा हरणी ।
कुत्ता स्याल बिलाय, पृथ्वी सब की जरणी ॥
कहे सोनी हरिचंद, सिरे गऊ गेंडा जाण ।
मानव गऊंवा भैंस कुंजरा, अज्या ऊंट वखाण ॥ ३७७ ॥

करोड़ अठारह तरवरां, खाण तीसरी जोय ।
अदबुद उठी रोग से, अचरज आयो मोय ॥
अचरज आयो मोय, आदरी बनिये चोरी ।
कियो जमीं को पाप, खाण तीनों कूं तोड़ी ॥
कहे सोनी हरिचंद, खाण तो चेतन दीशे दोय ।
करोड़ अठारह तरवरां, खाण तीसरी जोय ॥ ३७८ ॥

हरणी खरगी सुरणी, ज्यांका करे शिकार ।
सांबर रोजी मारते, बच्चा करे पुकार ॥
बच्चा करे पुकार, दूध वे किनका पीवे ।
और माता मारी जाय, किस विद बच्चा जीवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जीव को पूरा होत दुखार ।
हरणी खरगी सुरणी, ज्यांका करे शिकार ॥ ३७९ ॥

मापा काटे बेल का, लेते बकरा मार ।
पाड़ा छोड़े देव पे, आई जगत में हार ॥
आई जगत में हार, धरम क्षत्री का डूबे ।
और जीव मार के खाय, काग ज्यूं माथे लुंबे ।
कहे सोनी हरिचंद, दीन दोनुं पे भार ।
मापा काटे बेल का, लेते बकरा मार ॥ ३८० ॥

मानव घी गुड़ खावते, नित दीवाली की रात ।
गऊ भैंस कूं मारते, उगंते प्रभात ।।
उगंते प्रभात, कांबड़ी लीली मारे ।
पड़ी जगत में भूल, जीव कूं कैसे तारे ।।
कहे सोनी हरिचंद, बिगाड़ी बनिये बात ।
मानव घी गुड़ खावते, नित दीवाली की रात ।। ३८१ ।।

अज्या गाडर भैंस बेल गऊ, ज्यां का हासल लेत ।
जुग माता रा डाण सूं, बिगड़े घर का खेत ।।
बिगड़े घर का खेत, वाणिया पीछे लागा ।
विक्रम दिया सिखाय, राज कूं केते नागा ।।
कहे सोनी हरिचंद, जगत में राजा हुआ अचेत ।
अज्या गाडर भैंस बेल गऊ, ज्यां का हासल लेत ।। ३८२ ।।

करम कमायो वाणिये, शस्त्र दिया धराय ।
सिरदारा रंग तोड़िया, जमा घरा सूं जाय ।।
जमा घरा सूं जाय, करम सोई वाणे कीदा ।
बुध कूं दी भूलाय, पाप कूं हाथे दीधा ।।
कहे सोनी हरिचंद, लोक सब देते हाय ।
करम कमायो वाणिये, शस्त्र दिया धराय ।। ३८३ ।।

किया विचारा वाणिये, राज करण के तांहि ।
हुकमसिंह को फेरणो, सात द्वीप के मांहि ।।
सात द्वीप के मांहि, मरासी अपणा देशी ।
पेली जमा उठाय, राज की पूंजी लेसी ।।
कहे सोनी हरिचंद, राज कूं सूजत नांहि ।
किया विचारा वाणिये, राज करण के तांहि ।। ३८४ ।।

जो सुख चाहो आपणो, वेगा करो उपाय ।
मण का सेर बणावीया, अबे बणासी पांव ॥
अबे बणासी पांव, वेद करतब का राखे ।
राजा कूं बिलमाय, नाम देवत का भाखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, मारते गुपती घाव ।
जो सुख चाहो आपणो, वेगा करो उपाय ॥ ३८५ ॥

अमावस की रेण का, उगाया था चन्द ।
परगट जादू आणिया, कियो वाणिये फंद ॥
कियो वाणिये फंद, गगन में रतन चढ़ाया ।
वाणा घर उगार, ज्यां दिन जति मराया ॥
कहे सोनी हरिचंद, ठेठ से करी वाणिये गंद ।
अमावस की रेण का, उगाया था चन्द ॥ ३८६ ॥

जद मंदिर टूटा जैन का, बनियां उपर मार ।
दोय दीन जद एक था, ली जनोईयां धार ॥
ली जनोईयां धार, धरम कूं परगट कीधा ।
राजा शामिल होय, धरम का प्याला पीधा ॥
कहे सोनी हरिचंद, करो बनियों की गार ।
जद मंदिर टूटा जैन का, बनियां उपर मार ॥ ३८७ ॥

कलजुग लायो वाणिये, पाप तणे प्रसंग ।
गुपती होम करावते, गयो जगत को रंग ॥
गयो जगत को रंग, मानवी होते दोरा ।
पड़े काल की मार, जीवड़ा पावे फोड़ा ।
कहे सोनी हरिचंद, उड़गी घर-घर बंग ।
कलजुग लायो वाणिये, पाप तणे प्रसंग ॥ ३८८ ॥

वाणा विष की वेलड़ी, कियो जगत में जेर ।
बनियो कूं संहारिया, सदा होवसी खेर ॥
सदा होवसी खैर, जीत का बाजी डंका ।
दोय दीन की जीत, पवन का ढोलसी पंखा ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुखी वे मानव सेर ।
वाणा विष की वेलड़ी, कियो जगत में जेर ॥ ३८९ ॥

महापाप से जैन के, मंदिर जाते नांय ।
हस्ती आवे मारता, लिखा वेद के मांय ॥
लिखा वेद के मांय, भेद को पंडित भूले ।
जगत जाल लिपटाय, कला बिन मानव डूले ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो आतम मांय ।
महापाप से जैन के, मंदिर जाते नांय ॥ ३९० ॥

कंचन परख सोनार कूं, राजा न्याय प्रकाश ।
हीरा जड़िया परखते, ये जवेरी खास ॥
ये जवेरी खास, माश ले मुख से बोले ।
और नहीं न्याय की जाण, जिके नर भटकत डोले ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय का सदा वेद कूं वांच ।
कंचन परख सोनार कूं, राजा न्याय प्रकाश ॥ ३९१ ॥

तांबा चांदी सोवरण, चौथी धातु लोह ।
सीसो रांगो खट आद की, सदा आद में जोय ॥
सदा आद में जोय, चार करतब की चाले ।
और चार जुगों से रोग, वाणिया जुग में घाले ॥
कहे सोनी हरिचंद, दीन तो समझ लीजो दोय ।
तांबा चांदी सोवरण, चौथी धातु लोह ॥ ३९२ ॥

जस्ती धातु चलाई, हरणाकुश के नाम ।
पीतल आयो जगत में, ऐ रावण के काम ॥
ऐ रावण के काम, कंस ने कांसी आणी ।
खोपर कलजुग मांय, अबे बनियों की हाणी ॥
कहे सोनी हरिचंद, बटे नहीं पैसा दाम ।
जस्ती धातु चलाई, हरणाकुश के नाम ॥ ३९३ ॥

चार जुगां से चलत है, पूर जगत में जाल ।
पराक्रम टूटा प्राण का, झरे शीश का बाल ।
झरे शीश का बाल, जगत की सिद्धि उठी ।
रोग बधिया भरपुर, रोग से दुनिया खूटी ॥
कहे सोनी हरिचंद, वर्ष में दो-दो काळ ।
चार जुगां से चलत है, पूर जगत में जाल ॥ ३९४ ॥

तिरिया गई बल रुप से, हरणाकुश के पाप ।
बांझ बणाई जगत में, आ रावण की छाप ॥
आ रावण की छाप, कंस ने गर्भ गिरायो ।
अब जन्मे सोई मर जाय, पूत को कांई सरायो ॥
कहे सोनी हरिचंद, जपाते वाणा जाप ।
तिरिया गई बल रुप से, हरणाकुश के पाप ॥ ३९५ ॥

पेला जुग में केवते, दानव इनकी जात ।
दूजा जुग में राक्षसी, जादू इनके हाथ ॥
जादू इनके हाथ, तीसरे काफर वाजे ।
चौथे बनियां जात, पाप कर जादू साजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप बनियों के हाथ ।
पेला जुग में केवते, दानव इनकी जात ॥ ३९६ ॥

पैल पाप का नाम कूं, राक्षस विद्या जाण ।
दूजा जुग में थापीया, अदीठ चक्कर बाण ॥
अदीठ चक्कर बाण, तीसरे पोपा जादू ।
चौथे इंद्रजाल, भूल गये पंडित साधु ॥
कहे सोनी हरिचंद, चार की एक ही खाण ।
पैल पाप का नाम कूं, राक्षस विद्या जाण ॥ ३९७ ॥

लख चौरासी कुंडियां, यमपुरी है नाम ।
सब जादू वहां साधते, ये बनियों का काम ॥
ये बनियों का काम, खर्च वहां सब बनिया देते ।
सब जुग दिया डुबोय, नाम देवत का लेते ॥
कहे सोनी हरिचंद, डुबोया जुग का धाम ।
लख चौरासी कुंडिया, यमपुरी है नाम ॥ ३९८ ॥

रावण मारियो रामजी, हरणाकुश नरसिंग ।
कंस मारीयो कानजी, कौरव तातरसिंग ॥
कौरव तातरसिंग, जोर में आया पूरा ।
कोपीया पांडव कुमार, मारके फेक्या दूरा ॥
कहे सोनी हरिचंद, भेजिया ऊटों रे सरसिंग ।
रावण मारियो रामजी, हरणाकुश नरसिंग ॥ ३९९ ॥

बाड़ी घाली धान पे, ब्याज कियो भरपुर ।
करतब कीदा वाणिये, लक्ष्मी लेगा दूर ॥
लक्ष्मी लेगा दूर, सुरमा राजा होसी ।
चेती जुग संसार, चेतसी पंडित जोशी ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिया होगा धूड़ ।
बाड़ी घाली धान पे, ब्याज कियो भरपुर ॥ ४०० ॥

चौपट सट्टा शतरंज, जुआ गंजपा खेल ।
रोकड़ खोवे आंक पे, करे घीरत का तेल ॥
करे घीरत का तेल, तेल का होता गारा ।
फेर उड़ती धूड़, जगत में यूं परवारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, खट रामत कूं मेल ।
चौपट सट्टा शतरंज, जुआ गंजपा खेल ॥ ४०१ ॥

शराब खावे गोस्त कूं, फेर बोलते झूठ ।
भड़वा चोरी झारिया, उण कूं लेसी लूट ॥
उण कूं लेसी लूट, ज्यां की कीमत कैसी ।
वे सदा करम के नीच, जामनी कोई न देसी ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां के गई हीया की फूट ।
शराब खावे गोस्त कूं, फेर बोलते झूठ ॥ ४०२ ॥

कोईक राजा भूलसी, हेर दूसरी नार ।
वो तिरिया कूं देवसी, रोटी और रोजगार ॥
रोटी और रोजगार, लुगायां जुग में माची ।
ले तिरिया को डंड, कचेड़ी रोटी खासी ॥
कहे सोनी हरिचंद, फुल फल खासी बार ।
कोईक राजा भूलसी, हेर दूसरी नार ॥ ४०३ ॥

पापी हराम चोर के, राजा होसी यार ।
वो तिरिया कूं लावसी, राजा करसी प्यार ॥
राजा करसी प्यार, उसी पे रेसी राजी ।
कर लो दिल में तोल, दिखसी दोनू पाजी ॥
कहे सोनी हरिचंद, पड़ेला गुपती मार ।
पापी हराम चोर के, राजा होसी यार ॥ ४०४ ॥

राज रईयत कूं जाणते, बेटा जैसा मोद ।
झारी करसी रईयत में, सो तो बेटी चोद ॥
सो तो बेटी चोद, बुध वाणा फेरासी ।
हराम के प्रताप, जाल सूं लक्ष्मी जासी ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्ञान भीतर का खोद ।
राजा रईयत कूं जाणते, बेटा जैसा मोद ॥ ४०५ ॥

वाणा पापी जाणिये, वाणा करते घात ।
पुरुष मराया सूरमा, आदु राक्षस जात ॥
आदु राक्षस जात, द्वार से राखो दूरा ।
असल खान सिरदार, जगत में वो है सूरा ॥
कहे सोनी हरिचंद, बिगाड़ी वाणे बात ।
वाणा पापी जाणिये, वाणा करते घात ॥ ४०६ ॥

वाणा गलिया भटकते, धन हेरण के काज ।
केई जणारी लेत है, वाणा जुग में लाज ॥
वाणा जुग में लाज, नीम्ब सूं बनिया खारा ।
बड़े-बड़े भोपाल, कपट कर बनिये मारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, परख बिन डूबे राज ।
वाणा गलिया भटकते, धन हेरण के काज ॥ ४०७ ॥

लखणे गोला वाजते, जात वाजती नांहि ।
जाती चाकर वाजते, रंग दूसरा मांहि ॥
रंग दूसरा मांहि, जिणे सुं वजीर वाजे ।
राजा भूलगा रीत, खास में चाकर गाजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, बारता सभी डुबगी वांहि ।
लखणे गोला वाजते, जात वाजती नांहि ॥ ४०८ ॥

पर तिरिया मां जाणते, मांस मद सूं दूर ।
घर की परणी माणता, सो राजा भरपुर ॥
सो राजा भरपुर, उसी का दर्शन चावां ।
आठ पहर दिल मांय, उसी का मंगल गावां ॥
कहे सोनी हरिचंद, नित ज्यां बरसे नूर ।
पर तिरिया मां जाणते, मांस मद सूं दूर ॥ ४०९ ॥

वाणा जुग में देखते, सब राजा का जोर ।
विक्रम में सब एक है, दिया राज जुग तोड़ ॥
दिया राज जुग तोड़, न्याय राजा नहीं करते ।
वाणा होम कराय, जगत में आतम मरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर घड़ा पाप का फोड़ ।
वाणा जुग में देखते, सब राजा का जोर ॥ ४१० ॥

जहर कर दियो वाणिये, भाई बंद में खार ।
सौदागर दीवाण वाणिया, कोठारी लिखदार ॥
कोठारी लिखदार, लूंटते न्यारा-न्यारा ।
ऐसा जग में नहीं, राज का दीखत प्यारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, वार्ता सुण लिजो संसार ।
जहर कर दियो वाणिये, भाई बंद में खार ॥ ४११ ॥

मीठा मुख से बोलणा, रखो कुटुम्ब से प्यार ।
काम पड़ी जद होवसी, कुटुम्ब अपणा तैयार ॥
कुटुम्ब अपणा तैयार, तेज राजा का रेसी ।
सुखी बोयतर खान, सुखी भी अपणा देशी ॥
कहे सोनी हरिचंद, तोड़ राक्षस का द्वार ।
मीठा मुख से बोलणा, रखो कुटुम्ब से प्यार ॥ ४१२ ॥

नानम पाड़ी वाणिये, सभी राज के मांय ।
बालक राजा दीखते, दाना राजा नांय ।।
दाना राजा नांय, अकल तो कैसे आवे ।
वाणा होम कराय, जगत को खोज गमावे ।।
कहे सोनी हरिचंद, अर्ज है सभी जगत के तांय ।
नानम पाड़ी वाणिये, सभी राज के मांय ।। ४१३ ।।

धरम सती और सुरमा, ज्यां के उपर जाल ।
भला आदमी नीपजे, तुरंत चलावे काल ।।
तुरंत चलावे काल, बड़ां के काया मारे ।
कियो वाणिये जुल्म, जगत कूं कैसे तारे ।।
कहे सोनी हरिचंद, सुणजो क्या बुढ़ा क्या बाल ।
धरम सती और सूरमा, ज्यां के उपर जाल ।। ४१४ ।।

वाणा मुख से केवते, धणी राजका मैं ।
जगत राज को जाणते, परमेश्वर की देह ।।
परमेश्वर की देह, वाणिया राज पजावे ।
और कबुवक दे हड़ताल, सिंह का हुकम बजावे ।।
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये लियो जगत को छेह ।
वाणा मुख से केवते, धणी राजका मैं ।। ४१५ ।।

सूरा होकर जुझणा, खड़ग हाथ में झेल ।
गुपत चोर कूं पकड़ के, खड़ग उसी के मेल ।।
खड़ग उसी के मेल, दुष्ट का शीश उड़ावो ।
और करो जगत को न्याय, फेर सुख सम्पत पावो ।।
कहे सोनी हरिचंद, दुष्ट का शीश अगन में तेल ।
सूरा होकर जुझणा, खड़ग हाथ में झेल ।। ४१६ ।।

प्रजापत सोनार कायत, और खाती कीर लुहार ।
छीपा मोची साळवी, नावी खीजमतदार ।
नावी खीजमतदार, सीलावट तुरकीया वोरा ।
माली तेली और, रायका गऊआं चारा ॥
कहे सोनी हरिचंद, आद से क्षत्री राज द्वार ।
प्रजापत सोनार कायत, और खाती कीर लुहार ॥ ४१७ ॥

पींजारा रुई पींज के, रुई बणाते माल ।
और चमारा रंग के, दुरस्त करते खाल ॥
दुरस्त करते खाल, लखारा फेरुं केता ।
ये अठारा वर्ण, धरम से शामिल रेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, रखते सदा धरम की चाल ।
पींजारा रुई पींज के, रुई बणाते माल ॥ ४१८ ॥

मुसलमान शंकर के बेटे, विष्णु राज कुमार ।
ब्रह्म कुली ब्राह्मण के छोरुं, तीनोई एकण द्वार ॥
तीनोई एकण द्वार, सागरी माता होती ।
ॐकार थे बाप, पूजते सरुप ज्योति ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां का अपरम पार ।
मुसलमान शंकर के बेटे, विष्णु राज कुमार ॥ ४१९ ॥

वर्ण अठारा तीन के, ज्यांका अनेक होय ।
वाणा राक्षस बीज है, सब जुग दियो डुबोय ॥
सब जुग दियो डुबोय, जगत पे जादू फेरा ।
कियो बनिये जाल, सकल पर दीना घेरा ॥
कहे सोनी हरिचंद, बारता कहूं आद की जोय ।
वर्ण अठारा तीन के, ज्यांका अनेक होय ॥ ४२० ॥

वर्ण अठारह फंट के, हुआ वर्ण छत्तीस ।
छत्तीसा चौसठ भया, उपर बिगड़े बीस ॥
उपर बिगड़े बीस, चौरासी वर्ण केवाया ।
और आद वर्ण थे तीन, तीन एकण की माया ॥
कहे सोनी हरिचंद, कटाया वाणे ज्यांका शीश ।
वर्ण अठारह फंट के, हुआ वर्ण छत्तीस ॥ ४२१ ॥

तीन देव के वर्ण अठारह, राक्षस कुळ था न्यारा ।
और देव कला पे जले ठेठ सूं, चोर-चोर कूं प्यारा ॥
चोर-चोर कूं प्यारा, जगत को वाणा खोवे ।
पैली बेटा बणे, घरों में लक्ष्मी जोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिया सदा पापी हत्यारा ।
तीन देव के वर्ण अठारह, राक्षस कुळ था न्यारा ॥ ४२२ ॥

ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, राज करंते आप ।
माता ज्यांकी सागरी, ॐकार थे बाप ॥
ॐकार थे बाप, ज्यांका सुमरण करता ।
और हिरद स्वास उसास, नेतरा सुरती धरता ॥
कहे सोनी हरिचंद, अजंपा चले ज्यांका जाप ।
ब्रह्मा विष्णु महेश रंग, राज करंते आप ॥ ४२३ ॥

ज्यां दिन राक्षस रेवता, दरिया पारा बीच ।
घोड़ा घूमत राज का, तोड़ लावते शीश ॥
तोड़ लावते शीश, मुलक राक्षस नहीं आता ।
छल कर आता कोई, शस्त्रों मार उड़ाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में सुख होता जगदीश ।
ज्यां दिन राक्षस रेवता, दरिया पारा बीच ॥ ४२४ ॥

असंख जुगरी वार्ता, तीन देव परतीत ।
लाख वर्ष भरपुर के, देही हुई वरतीत ।।
देही हुई वरतीत, राक्षसे पाप चलायो ।
कर सौदागर रुप, जदी हरणाकुश लायो ।।
कहे सोनी हरिचंद, जठा सूं काची देह मरती ।
असंख जुगरी वार्ता, तीन देव परतीत ।। ४२५ ।।

आगे मानव होवता, लाख वर्ष उनमान ।
देव सरुपी खेलता, सदा धरम की स्यान ।।
सदा धरम की स्यान, हाथ नव लंबा होता ।
करता आतम सेव, ज्ञान का हीरा पोता ।।
कहे सोनी हरिचंद, जाहिर थी कंचन खाण ।
आगे मानव होवता, लाख वर्ष उनमान ।। ४२६ ।।

होम चलाया रेख पे, रेख-रेख पे घात ।
ज्यांरा वेद बणाविया, घर-घर देखे हाथ ।।
घर-घर देखे हाथ, मानवी यूं भरमाणा ।
और बात-बात नुकसान, खराबी करते वाणा ।।
कहे सोनी हरिचंद, दुखी जुग तरवर पात ।
होम चलाया रेख पे, रेख-रेख पे घात ।। ४२७ ।।

सपना देते रेण का, पलीत छप्पन करोड़ ।
लख चौरासी केवते, ज्यां गुपत रेवते चोर ।।
ज्यां गुपत रेवते चोर, सपने में रुप दिखाते ।
कबुवक देते मार, कोईक दिन रंग रमाते ।।
कहे सोनी हरिचंद, होमाते वाणा कुक्कड़ मोर ।
सपना देते रेण का, पलीत छप्पन करोड़ ।। ४२८ ।।

जेता सुपना होवता, ऐतो जादू जाण ।
राज सीरिपत समझलो, गुपत वेत है बाण ॥
गुपत वेत है बाण, सपने कूं झूठा करते ।
और कबुवक सच्चा करे, मानवी विस्वा धरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, सभी क्रिया में हाण ।
जेता सुपना होवता, ऐतो जादू जाण ॥ ४२९ ॥

रगत खून की जगत में, नदियां चले विकार ।
पाप होम से धरण कूं, पूरा होत दुखार ॥
पूरा होत दुखार, होम तो वाणा करते ।
और जादू के प्रताप, जगत में आतम मरते ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय की जुग में करो पुकार ।
रगत खून की जगत में, नदियां चले विकार ॥ ४३० ॥

जंद करोड़ तैतीस है, भूत करोड़ छप्पन ।
लख चौरासी जून पे, फिरे रात और दिन ॥
फिरे रात और दिन, चोट सूं आतम मरते ।
और उनके पीछे होम, लाख चौरासी करते ॥
कहे सोनी हरिचंद, होमते गऊ तुरंगा अन्न ।
जंद करोड़ तैतीस है, भूत करोड़ छप्पन ॥ ४३१ ॥

इण परवाणे वाणिये, गुपत बणाया जम ।
सब जादू की बात है, करो राज गुरगम ॥
करो राज गुरगम, हीया में हिम्मत वेतो ।
जादू चले अपार, समझ के वेगा चेतो ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुन में तोड़े दम ।
इण परवाणे वाणिये, गुपत बणाया जम ॥ ४३२ ॥

जल पीवंती पृथ्वी, पीती बारो मास ।
नहीं होवती बिजली, नहीं कटकता गाज ।
नहीं कटकता गाज, रोग से गाजण लागी ।
ओ हुवो गर्भ में रोग, कलेजे अग्नि जागी ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरण की सबके आस ।
जल पीवंती पृथ्वी, पीती बारो मास ॥ ४३३ ॥

नहीं पृथ्वी धुजती, नहीं पड़ंता काल ।
नहीं स्त्री बांज थी, नहीं मरंता बाल ॥
नहीं मरंता बाल, पाप चौरासी थापी ।
गुपती होम कराय, जगत की उमर कापी ॥
कहे सोनी हरिचंद, राक्षसे लिया जीव कूं गाल ।
नहीं पृथ्वी धुजती, नहीं पड़ंता काल ॥ ४३४ ॥

नहीं जगत में ताव था, जरा नहीं था रोग ।
नहीं जीव पर डांण था, नहीं तिलां का भोग ॥
नहीं तिलां का भोग, करम वाणे सिखाया ।
कर जादू जग जाल, कपट कर ले गया माया ।
कहे सोनी हरिचंद, जग में दुखी होत है लोग ।
नहीं जगत में ताव था, जरा नहीं था रोग ॥ ४३५ ॥

नहीं जीव कूं मारते, नहीं पिंड में खार ।
पर तिरिया नहीं भोगते, नहीं काटते झाड़ ॥
नहीं काटते झाड़, लकड़ियां सूखी लाता ।
और अन्न फल खाते बहोत, धरण का मंगल गाता ॥
कहे सोनी हरिचंद, पाप सूं आई हार ।
नहीं जीव कूं मारते, नहीं पिंड में खार ॥ ४३६ ॥

नहीं जगत में जागरी, नहीं होवती पोल ।
नहीं स्त्री बिगड़ती, नहीं जावता तोल ।।
नहीं जावता तोल, बीज राजा का डूबा ।
जदी गया ईमान, और तिरिया पे लूंबा ।।
कहे सोनी हरिचंद, पाप से घटे राज का मोल ।
नहीं जगत में जागरी, नहीं होवती पोल ।। ४३७ ।।

नहीं जगत में चोर था, नहीं बोलते झूठ ।
नहीं ब्याज था बाड़ियां, नहीं जगत में फूट ।।
नहीं जगत में फूट, जगत कूं वाणे मारा ।
वे राजा अंधे भीत, दीप बिन घोर अंधारा ।।
कहे सोनी हरिचंद, राज कूं नहीं सुझती पूठ ।
नहीं जगत में चोर था, नहीं बोलते झूठ ।। ४३८ ।।

नहीं शंखीया जहर था, नहीं भेख में पंथ ।
नहीं पत्थर कूं पूजते, नहीं बिगड़ते संत ।।
नहीं बिगड़ते संत, कला वाणे फेरी ।
गुपती पाप कराय, जीव कूं कीना जहेरी ।।
कहे सोनी हरिचंद, स्त्री नहीं धारती कंथ ।
नहीं शंखीया जहर था, नहीं भेख में पंथ ।। ४३९ ।।

नहीं पुरुष के सुंड थी, नहीं होवती पूंछ ।
नहीं जगत में हींजड़ा, नहीं स्त्री मूंछ ।।
नहीं स्त्री मूंछ, इंदरी वाणे होमी ।
यूं डूबो संसार, डुबगी सारी भूमी ।।
कहे सोनी हरिचंद, राज में नहीं खावते घूस ।
नहीं पुरुष के सुंड थी, नहीं होवती पूंछ ।। ४४० ।।

नहीं कान में जन्मता, दश नहीं था शीश ।
नहीं नाक में जन्मता, नहीं जगत में नीच ॥
नहीं जगत में नीच, मांस को खाणो खाया ।
और खाई राक्षसी खुराक, जण सूं नीच केवाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, बारता केवा विस्वा वीस ।
नहीं कान में जन्मता, दश नहीं था शीश ॥ ४४१ ॥

नहीं नजर फल लागता, मुआ नहीं जीवंत ।
कुदरत चोला जीव का, तीन गुण सीवंत ॥
तीन गुण सीवंत, बीज वायो से उगे ।
और दूजा जादू जाण, शिखर घर सच्चा पूगे ॥
कहे सोनी हरिचंद, अमीरस उलट स्वास पीवंत ।
नहीं नजर फल लागता, मुआ नहीं जीवंत ॥ ४४२ ॥

चंद्र भाण नहीं ग्रहण था, नहीं अंधेरी रात ।
हरदम चंद्र उगता, दिन अस्त के साथ ।
दिन अस्त के साथ, कळा थी तीसों पूरी ।
और हुआ धरण कूं रोग, जठां सूं भई अधुरी ॥
कहे सोनी हरिचंद, कला बनियों के हाथ ।
चंद्र भाण नहीं ग्रहण था, नहीं अंधेरी रात ॥ ४४३ ॥

नहीं लिंग कूं पूजते, नहीं पूजते बाण ।
या बदनामी देव पे, जरा रखी नहीं काण ॥
जरा रखी नहीं काण, देव कूं भ्रष्ट मिलाया ।
और हता लाज का देव, राक्षसे लिंग पूजाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, देव तो सिद्ध रुप में जाण ।
नहीं लिंग कूं पूजते, नहीं पूजते बाण ॥ ४४४ ॥

नहीं शीश पर गंग थी, नहीं अंग पर साप ।
और कालबेलिया नहीं हता, जगत लगायो पाप ।
जगत लगायो पाप, वेद गीता में गावे ।
पड़ी जगत में भूल, किस विद रस्ते आवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुणियो राज सीरीपत आप ।
नहीं शीश पर गंग थी, नहीं अंग पर साप ॥ ४४५ ॥

नहीं पुरुष के पांख थी, अनड़ गगन में नांय ।
नहीं पांख थी तुरंगा, झूठ कथै जग मांय ॥
झूठ कथै जग मांय, भ्रम सूं मानव भूले ।
और बगल पोथिया घाल, राक्षसी घर-घर डोले ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में भूल गया घट सांई ।
नहीं पुरुष के पांख थी, अनड़-गगन में नांय ॥ ४४६ ॥

नहीं प्याल में गांव है, नहीं नागमुख बीज ।
बीज अमल का आद से, ये कुदरती चीज ॥
ये कुदरती चीज, कवि सब केवे झूठी ।
कोईक आंधा भीत, कवि के हिरदे खूंटी ॥
कहे सोनी हरिचंद, पहेल से लीजे धीज ।
नहीं प्याल में गांव है, नहीं नागमुख बीज ॥ ४४७ ॥

चौवाण कहते सर्प कूं, ये जड़ां से झूठ ।
ये तो कीड़ा रोग का, ये जहर की मूंठ ॥
ये जहर की मूंठ, वाणिये साजी क्रिया ।
और जादू के प्रताप, जहर सर्पों में भरीया ॥
कहे सोनी हरिचंद, साधना चली जठा सूं फूट ।
चौवाण कहते सर्प कूं, ये जड़ां से झूठ ॥ ४४८ ॥

नहीं अजारा अमल पे, लूंण अजारा नांई ।
राज अजारा कर दिया, डूब गई जुग मांई ॥
डूब गई जुग मांई, अजारे वस्तु दीधी ।
रईयत डूबे राज, जहर की मटकी पीधी ॥
कहे सोनी हरिचंद, कला है जुग डूबण के तांई ।
नहीं अजारा अमल पे, लूंण अजारा नांई ॥ ४४९ ॥

आगे घर-घर होवता, हीरो का प्रकाश ।
बर्तन मोहरो हेम की, रहती सब जुग पास ॥
रहती सब जुग पास, बिजली कैसे उठी ।
और खायो होसी अन्न, लक्ष्मी कैसे खूटी ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये कियो जगत में नाश ।
आगे घर-घर होवता, हीरो का प्रकाश ॥ ४५० ॥

वहीं वंश कूं देवता, कंचन मोती दान ।
तोटो आयो जगत में, नहीं मिलंता धान ॥
नहीं मिलंता धान, अगाड़ी हस्ती देता ।
वाणे कला बताय, दियोड़ाई पीछा लेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, पड़ी बुद्धि की हाण ।
वहीं वंश कूं देवता, कंचन मोती दान ॥ ४५१ ॥

खार थेपड़ी ओखणी, खोल मांयली ओख ।
कातो खागी डाक बाण को, सोनारों में दोख ॥
सोनारों में दोख, मजुरी दुणी लीजे ।
वे चोखा करणा काम, ग्राहक कूं पैली कहीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, भला जद कैसी लोग ।
खार थेपड़ी ओखणी, खोल मांयली ओख ॥ ४५२ ॥

बीज होत रुद्राक्ष रा, शीश नहीं उंगत ।
भूले जोगी जगत में, चले आपके पंथ ॥
चले आपके पंथ, कुटूंब का खोज गमाया ।
हासल खोटा किया, जगत का आटा खाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में ठग होत है संत ।
बीज होत रुद्राक्ष रा, शीश नहीं उगंत ॥ ४५३ ॥

गेरु मिट्टी खाण है, ये रंग है आद ।
रगत भंग का नहीं है, झूठे करे विवाद ॥
झूठे करे विवाद, जगत में बिगड़े जोगी ।
पैली तिरिया मुंड, लार सूं होते भोगी ॥
कहे सोनी हरिचंद, भूल से पड़ी जगत में खाद ।
गेरु मिट्टी खाण है, ये रंग है आद ॥ ४५४ ॥

ध्यान करे बिजग रोकते, उनका जोगी नाम ।
पर तिरियां कूं भोगवे, करते काम हराम ॥
करते काम हराम, जोग घर दोनुं बिगड़ा ।
किया कुटूंब का नाश, लगाया झूठा झगड़ा ॥
कहे सोनी हरिचंद, किस विद पावे श्याम ।
ध्यान करे बिजग रोकते, उनका जोगी नाम ॥ ४५५ ॥

राग छोड़ बैराग में, जगत लावते भाव ।
जदी धरम की चालती, भवसागर में नाव ॥
भवसागर में नाव, धरम को लेखो लेता ।
और नहीं राक्षसी खुराक, जदी नर सूरा वेता ॥
कहे सोनी हरिचंद, मारते सदा काल पे घाव ।
राग छोड़ बैराग में, जगत लावते भाव ॥ ४५६ ॥

पाप चलाया वाणिये, कई हजारों लाख ।
बुद्धि बिगड़ी पाप से, नित उड़ती खाख ॥
नित उड़ती खाख, जगत में राजा भूले ।
खाय जीव मरदार, जाल बुद्धि से डूले ॥
कहे सोनी हरिचंद, समझियां रेसी साख ।
पाप चलाया वाणिये, कई हजारों लाख ॥ ४५७ ॥

सर्व जात बोलाय के, करो धरम की बूझ ।
पास रखो सिरदार कूं, रखो घरों में सूझ ॥
रखो घरों में सूझ, कायस्थ कूं देवो दीवाणी ।
सरे कलम सिरदार, जगत का रेसी पाणी ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां से नहीं राखणा दूज ।
सर्व जात बोलाय के, करो धरम की बूझ ॥ ४५८ ॥

इसमें निंदत नहीं है, ये न्याय की बात ।
चार जुगों से कूकते, संत भला के साथ ॥
संत भला के साथ, जगत का जीव उगारो ।
करो जगत को न्याय, जगत चोरों कूं मारो ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्याय कर जुग जीव जड़ पात ।
इसमें निंदत नहीं है, ये न्याय की बात ॥ ४५९ ॥

पाप जाल कूं तोड़ के, चलो धरम के पांव ।
गोला जुग में नहीं है, गोला है अन्याय ॥
गोला है अन्याय, मानवी देव सरुपी ।
घटे जगत का जहर, फेर अमृत की कूंपी ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुणो जुग बावन राव ।
पाप जाल कूं तोड़ के, चलो धरम के पांव ॥ ४६० ॥

आगे बेटी वाणिये, राजा कूं परणाई ।
वजीर वहां से निपणा, चाकर जात केवाई ॥
चाकर जात केवाई, वाणिया नीच कुळी का ।
खाते पाड़ा गऊ, वाणिया दाग गुली का ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां घर बेटी जाई ।
आगे वाणे बेटियां, राजा कूं परणाई ॥ ४६१ ॥

छोगा गुथ्या फूल का, छोगा कूं परणाई ।
पीछे लाई राज में, पासवान केवाई ॥
पासवान केवाई, जठा सूं डूबण लागा ।
रंडी गोस्त खिलाय, हंस का कीदा कागा ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणियें कला चलाई ।
छोगा गूथ्या फूल का, छोगा कूं परणाई ॥ ४६२ ॥

राजल परण्यो नेमजी, बोळी जोनो साथ ।
जदी वाणिये रांधियो, पीसुड़ा को भात ॥
पीसुड़ा को भात, मारिया पाड़ा घेटा ।
नेम जीमीया नहीं, जठा सूं खोले बैठा ॥
कहे सोनी हरिचंद, पहले तो सब ही खात ।
राजल परण्यो नेमजी, बोळी जोनो साथ ॥ ४६३ ॥

वाणा डूली जात है, वाणा राक्षस खाण ।
जग डुबोयो वाणिये, फेर डुबोयो धान ॥
फेर डुबोयो धान, राज आगम नहीं देखी ।
वाणा काल पड़ाय, जगत की उठी सेखी ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत सब सुणियो कान ।
वाणा डूली जात है, वाणा राक्षस खाण ॥ ४६४ ॥

वाणा सिद्धि भूल गया, राक्षस गुण प्रताप ।
लड़का कूं ले डूबते, ले डूबे मां-बाप ॥
ले डूबे मां-बाप, डूबती इनको दीखे ।
लड़का विष की वेल, उगता वे भी सीखे ॥
कहे सोनी हरिचंद, पेठ गया वाणा के घर पाप ।
वाणा सिद्धि भूल गया, राक्षस गुण प्रताप ॥ ४६५ ॥

अण परवाणे वाणिये, करी जगत की बुध ।
सभी जीव कूं मारते, जरा नहीं है सुध ॥
जरा नहीं है सुध, भूत ज्युं सब कूं कीदा ।
हराम छूटे नहीं, जाल में वाणिये लीदा ॥
कहे सोनी हरिचंद, किसी कूं नहीं सुझती हद ।
अण परवाणे वाणिये, करी जगत की बुध ॥ ४६६ ॥

मुई खालड़ी भीजती, नहीं उगंता बाल ।
जीवतड़ा के उगता, क्या बूढ़ा क्या बाळ ॥
क्या बूढ़ा क्या बाळ, झाड़ पृथ्वी में उगे ।
पृथ्वी जीवत जाण, खंड में सुरती पूगे ॥
कहे सोनी हरिचंद, जरा सा हीया खोल के भाल ।
मुई खालड़ी भीजती, नहीं उगंता बाल ॥ ४६७ ॥

बिमारी में पुरुष के, बाल नहीं उंगत ।
यूं पृथ्वी बिमार है, लियो वाणिये अंत ॥
लियो वाणिये अंत, जिणसुं नीपत थाकी ।
मरा मरा उंगत, जरा दीखे नहीं झांकी ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में सुणियो मेरा मीत ।
बिमारी में पुरुष के, बाल नहीं उगंत ॥ ४६८ ॥

सो कबुतर पालते, बाज मरे तो कांही ।
यूं चौरासी वरण है, एक राक्षसी नांही ॥
एक राक्षसी नांही, वाणिये जग डूबोयो ।
कर जादू जग जाल, जगत कूं जड़ से खोयो ॥
कहे सोनी हरिचंद, वाणिये जुलम कियो जग मांही ।
सो कबुतर पालते, बाज मरे तो कांही ॥ ४६९ ॥

कंवर जन्मता राज में, रखे बड़ा रण धाव ।
ओ नीच पेट में उतरा, किण विद खेले दाव ॥
किण विद खेले दाव, किस विद सूरा होवे ।
पड़े जरासी भीड़, राज में बैठा रोवे ॥
कहे सोनी हरिचंद, कला बिन फूटी नाव ।
कंवर जन्मता राज में, रखे बड़ा रण धाव ॥ ४७० ॥

विदुर वंशीया थापणा, चाकर नहीं लिखंत ।
वजीर भी नहीं केवणा, मानव एक ही पंथ ॥
मानव एक ही पंथ, जगत सब अपणे भाई ।
एबो भरी जात, जिणसुं गोल केवाई ॥
कहे सोनी हरिचंद, विदुर जो हुवे ईया में संत ।
विदुर वंशीया थापणा, चाकर नहीं लिखंत ॥ ४७१ ॥

बेटी भेजे सासरे, फेर बोलाते पीर ।
ये धरम कूं जाणते, सो राजा गंभीर ॥
सो राजा गंभीर, उसी का दर्शन चांवा ।
आठ पहर दिल मांय, उसी का मंगल गांवा ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां नर नाया गंगा नीर ।
बेटी भेजे सासरे, फेर बोलाते पीर ॥ ४७२ ॥

सदा सुख श्री राज कूं, श्री सुख गुरु आप ।
श्री सुख मां धरण कूं, श्री सुख मां-बाप ॥
श्री सुख मां-बाप, श्री सुख न्याय सुणाया ।
सुख तरवर सब रुख, श्री सुख आवत माया ॥
कहे सोनी हरिचंद, जगत में जपो श्री सुख जाप ।
सदा सुख श्री राज कूं, श्री सुख गुरु आप ॥ ४७३ ॥

गुरु अनोपस्वामी आविया, ओरो के अवतार ।
सदा गुरुजी भेटता, लिया काल कूं मार ॥
लिया काल कूं मार, गुरां से गुरुगम पाया ।
सदा गुरु प्रकाश, धरम का भेद बताया ॥
कहे सोनी हरिचंद, धरम की बांधो कार ।
गुरु अनोपस्वामी आविया, ओरो के अवतार ॥ ४७४ ॥

मात जेतादे महासती, सत कमायो साच ।
वो ही गर्भ में जन्मीयां, कीका अनोपदास ॥
कीका अनोपदास, पाप कूं ओलख लीदो ।
गुपत पाप कूं देख, जगत में हेलो दीदो ॥
कहे सोनी हरिचंद, मोय तो गुरु चरण की आश ।
मात जेतादे महासती, सत कमायो साच ॥ ४७५ ॥

साख चौहाणा अनोपदास, नख मादरेसा जाण ।
पिता तो हीरासिंहजी, वांका करुं वखाण ॥
वांका करुं वखाण, जेत मां गोद खिलाया ।
पाया अमृत दूध, धरम का मंगल गाया ॥
कहे सोनी हरिचंद, ज्यां का सदा नाम निरवाण ।
साख चौहाणा अनोपदास, नख मादरेसा जाण ॥ ४७६ ॥

सदा गुरुजी पिंड में, सिद्धि गुरां की जाण ।
अनोपस्वामी सेवता, पद पाया निरवाण ॥
पद पाया निरवाण, धरम का मंगल गावां ।
मिलिया मोय अनोप, चरण में शीश नमावां ॥
कहे सोनी हरिचंद, गुरुजी कंचन मोती खाण ।
सदा गुरुजी पिंड में, सिद्धि गुरां की जाण ॥ ४७७ ॥

बाला के घर जन्मीया, बाई गुमाना नाम ।
महा पद पायो प्रेम से, सदा लेत निज नाम ॥
सदा लेत निज नाम, गाम रोवाड़े रेते ।
सदा दान अन्न धन, नित संतों कूं देते ॥
कहे सोनी हरिचंद, सुमरते रामो राम ।
बाला के घर जन्मीया, बाई गुमाना नाम ॥ ४७८ ॥

रोवाड़ा में ब्याविया, पीर नराणो गाम ।
ज्यां घर पोते जन्मीया, बाई गुमाना नाम ॥
बाई गुमाना नाम, ठेठ से भक्ति झोली ।
पति करंतो रीस, तोई माला नहीं मेली ॥
कहे सोनी हरिचंद, पिंड में रामो राम ।
रोवाड़ा में ब्याविया, पीर नराणो गाम ॥ ४७९ ॥

जैता मांडिया वेद में, सो तो हाजिर जाण ।
अण सूं आगे होवसी, सतजुग रा मंडाण ॥
सतजुग रा मंडांण, खोज बनियो का जासी ।
तिरिया उनकी कैद, जगत में सब सुख आसी ॥
कहे सोनी हरिचंद, चढ़ेला जदी धरम निरवाण ।
जैता मांडिया वेद में, सो तो हाजिर जाण ॥ ४८० ॥

ये ग्रंथ को पाठ करे, तो महाधरम फल पाय ।
धरम न्याय का म्याना पावे, मेल अंग का जाय ॥
मेल अंग का जाय, सदा सुख सम्पत पावे ।
होवे ब्रह्म प्रकाश, मौज के मंगल गावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, न्हावते सदा गंग जल मांय ।
ये ग्रंथ को पाठ करे, तो महाधरम फल पाय ॥ ४८१ ॥

ये निकलंकी पद है, ये जमीं जीव को न्याय ।
सुणियो बोयतर खानजी, सुणियो बावन राव ॥
सुणियो बावन राव, प्रेम सूं मिलती कीजे ।
अंग्रेजों बुधवान, प्रेम सूं शामिल लीजे ॥
कहे सोनी हरिचंद, मारणा गुपत चोरों पे घाव ।
ये निकलंकी पद है, ये जमीं जीव को न्याय ॥ ४८२ ॥

कुंडलिया सत न्याय का, जग में करी पुकार ।
राजा पासता न्याय कर, छोड़ो पाप शिकार ॥
छोड़ो पाप शिकार, हिन्दवा मुसलमाना ॥
दोय दीन को धरम, जगत सब सुणियो काना ॥
कहे सोनी हरिचंद, बोलणा मीठा वचन मुखार ।
कुंडलिया सत न्याय का, जग में करी पुकार ॥ ४८३ ॥

अंग्रेजों के राज में, लाखों रोटी पाय ।
अंग्रेजों नहीं होवते तो, लाखों ही मर जाय ॥
लाखों ही मर जाये, लाखों तिनखा पावे ।
अंग्रेजों प्रताप, मौज के मंगल गावे ॥
कहे सोनी हरिचंद, देव ज्यूं अंग्रेजों दरसाय ।
अंग्रेजों के राज में, लाखों रोटी पाय ॥ ४८४ ॥

न्याय करे सो गुणपति, न्याय बिना गुण नांही ।
मोटो गुणपति पृथ्वी, अनेक गुण इण मांही ॥
अनेक गुण इण मांही, गुणी राजेश्वर जाणु ।
गुणी दीन को घर, दीन तो दोय वखाणु ॥
कहे सोनी हरिचंद, देखलो न्याय ब्रह्म के मांही ।
न्याय करे सो गुणपति, न्याय बिना गुण नांही ॥ ४८५ ॥

नमो नमो सब जगत कूं, राज द्वार श्रीराम ।
सात सलामी खान कूं, अंग्रेजों प्रणाम ॥
अंग्रेजों प्रणाम, गुरुजी अनोपदासजी ।
करुं भैख प्रणाम, पासता मुल्ला काजी ॥
कहे सोनी हरिचंद, चराचर पूजू नाम ।
नमो नमो सब जगत कूं, राज द्वार श्रीराम ॥ ४८६ ॥

इति आत्म पुराण सम्पूर्ण

● प्रकाशक ●

श्री अनोपस्वामीजी महाराज की झुंपडी

नकलंग धाम, झुण्डाल
सरदार पटेल रिंग रोड, नकलंग चौक,
मु. पो. झुण्डाल, जि. गाँधीनगर (गुज.)